पाप और उद्धार

पाप और उद्धार

लेखक
सनी डेविड

सत्य सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक :
मसीह की कलीसिया
बॉक्स ३८१५
नई दिल्ली ११००४८

SIN AND SALVATION

By SUNNY DAVID

मुद्रक
प्रिंट इन्डिया
मायापुरी, नई दिल्ली

पुस्तक के विषय में

पाप हरएक मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या है। पाप से मुक्ति पाना प्रत्येक मनुष्य की सबसे प्रमुख आवश्यकता है। पृथ्वी पर नाना प्रकार के धर्म हैं; विभिन्न प्रकार की आराधनाएं तथा उपासनाएं हैं- और इन सबका एक ही उद्देश्य है, अर्थात, पाप से छुटकारा, मुक्ति, या उद्धार।

परमेश्वर केवल एक ही है। उसी ने मनुष्य को बनाया है। वह मनुष्य की समस्या से और उसकी आवश्यकता से भली-भांति परिचित है। उसने मनुष्य की समस्या के समाधान और उसकी आवश्यकता की पूर्ति के विषय में मनुष्य को अपने वचन की पुस्तक बाइबल में स्पष्ट रुप से बताया है।

पाप क्या हैं ? मनुष्य पाप क्यों करता है ? मनुष्य को पाप क्यों से बचना चाहिए ? पाप से किस प्रकार बचा जा सकता है ? परमेश्वर ने मनुष्य का पाप से उद्धार करने के लिये क्या किया है ? और मनुष्य को पाप से मुक्ति पाने के लिये क्या करना चाहिए ? इन्हीं सब प्रश्नों के उत्तर देने का भरपूर प्रयत्न मैं ने प्रस्तुत पुस्तक में किया है। यदि इस पुस्तक को पढ़कर कोई भी व्यक्ति अपना मन पाप से फिराकर सच्चे परमेश्वर के पास वापस आ जाएगा तो मुझे मेरे परिश्रम का प्रतिफल मिल जाएगा। इसी आशा के साथ अपने रेडियो प्रवचनों को मैंने प्रस्तुत पुस्तक का रुप दिया है।

सनी डेविड

विषय सूची

	पृष्ठ
पाप का दाम	7
पाप नाश करता है	12
पाप का कारण	17
पाप के कारण	22
पाप की मजदूरी	27
पाप का स्वभाव	31
पाप का अनुग्रह	36
पाप और मुक्ति	40
पाप पर विजय	44
यीशु हमें सब पापों से बचाता है	49
पाप का मार्ग	54
पाप से बचने का मार्ग	58

पाप का दाम

आज मैं आप का ध्यान इस बात पर दिलाना चाहता हूँ कि पाप का दाम बड़ा ही विशाल है। यूं तो दुनिया में बड़ी-बड़ी कीमती चीजें हैं और कीमती मशीनें हैं; बहुमूल्य पत्थर और सोने - चांदी की कीमती वस्तुएं हैं। लेकिन इन सब चीजों का दाम चुकाया जा सकता है। परन्तु पाप का दाम ऐसा विशाल है कि उसे कोई भी मनुष्य कभी भी पूरी तरह से नहीं चुका सकता। प्रभु यीशु ने एक बार कहा था, कि, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?" (मत्ती १६:२६)। यहां यीशु ने हमारे सामने एक ऐसा तराजू रखा है जिसके दोनों पलड़ों में दो अलग-अलग चीजें हैं। उसके एक पलड़े में तो जगत की सारी वे वस्तुएं हैं जिन्हें मनुष्य प्राप्त करना अपना सौभाग्य समझता है, यानि रुपया-पैसा, जमीन-और-जायदाद, और मान और सम्मान और वे सारी वस्तुएं जिन्हें इन्सान अपने सुख विलास के लिये हासिल करना चाहता है। और उस तराजू के दूसरे पलड़े में मनुष्य के वह प्राण या उसकी वह आत्मा है जिसे उसने अपनी सृष्टि के समय अपने सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर से प्राप्त किया था। वह आत्मा जो इन्सान का वास्तविक मनुष्य है, और जो मृत्यु के कारण मनुष्य के शरीर से अलग होकर अनन्तकाल मे प्रवेश करके हमेशा के लिये वर्तमान रहेगा।

यहां प्रभु यीशु का प्रश्न बड़ा ही महत्वपूर्ण है। यीशु ने कहा था, कि पृथ्वी पर रहते हुए यदि कोई मनुष्य जगत की सभी वस्तुओं को प्राप्त कर लेता है, यानि उसके पास एक बहुत अच्छी नौकरी या व्योपार है, या वह एक बड़ा अधिकारी या मंत्री बन जाता है। फिर उसके पास रहने को एक बहुत बढ़िया

घर या बंगला है, मोटर-गाड़ियां, नौकर-चाकर, और संसार की प्रत्येक वस्तु उसके पास है। परन्तु बात यह है कि कितने समय तक पृथ्वी पर रहकर वह मनुष्य उन सब वस्तुओं का उपयोग कर सकता है? क्योंकि एक समय निश्चित है जब वह मरेगा और इस संसार से हमेशा के लिये चला जाएगा। शायद साठ वर्ष बाद या अस्सी या सौ बरस बाद। परन्तु एक दिन अवश्य ही वह जाएगा। उस दिन उसका अधिकार या बड़ा ओहदा उसे नहीं रोक सकेगा; उस दिन उसका धन दौलत और जो कुछ भी ज़मीन पर उस ने इकट्ठा किया था, कोई भी वस्तु उसे जाने से नहीं रोक सकेगी। और वह उन वस्तुओं का आनन्द उठाने के लिये फिर कभी वापस नहीं आएगा। वह उन सब चीजों को पृथ्वी पर हमेशा के लिये छोड़कर सदा के लिये इस जगत से चला जाएगा। और अब प्रश्न यह है, कि जब वह इस जगत से जाता है और अपने प्राण या अपनी आत्मा की हानि उठाता है, यानि पाप के कारण उसकी आत्मा नरक की उस पीड़ा में हमेशा के लिये प्रवेश करती है जहां हमेशा का रोना और दांतों का पीसना होगा, तो ऐसे इन्सान को वास्तव में क्या लाभ होगा? जब वह इस जगत को छोड़कर जाएगा तो वह अपने साथ कुछ भी नहीं ले जा पाएगा। वह यहाँ से एक निर्धन की तरह जाएगा। नरक से अपना छुटकारा करवाने को देने के लिये उसके पास कुछ भी नहीं होगा। हां, जब वह इस पृथ्वी पर था तो अपनी शक्ति और अपने धन और अधिकार के बल से वह बड़ी-बड़ी मुसीबतों से छूट जाता था। परन्तु वहां, उस अनन्तकाल में, उसके पास अपने छुटकारे के दाम में देने के लिये कुछ भी नहीं होगा। इसी कारण यीशु ने यह कहा था कि मनुष्य यदि सारे जगत को भी प्राप्त कर ले परन्तु अन्त में यदि वह अपनी आत्मा को खो दे तो उसे क्या लाभ होगा?

इस बात से हमें प्रभु यीशु की वह कहानी भी याद आ जाती है जिसका वर्णन हमें बाइबल में इन शब्दों में मिलता है कि, "एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी कपड़े और मलमल पहिनता था और प्रति-दिन सुख विलास और धूम धाम के साथ रहता था।" और उन्हीं दिनों की बात है कि, "लाज़र नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ उसकी डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था। और वह चाहता था, कि धनवान की मेज़ पर की जूठन से अपना पेट भरे; बरन

कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे। और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर इब्राहीम की गोद में पहुंचाया।" और फिर कुछ समय के बाद, "वह धनवान भी मरा और गाड़ा गया। और अधोलोक में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाई, और दूर से इब्राहीम की गोद में लाजर को देखा। और उस ने पुकारकर कहा, हे पिता इब्राहीम मुझ पर दया करके लाजर को भेज दे, ताकि वह अपनी उंगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं। परन्तु इब्राहीम ने कहाः हे पुत्र, स्मरण कर, कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं ले चुका है, और वैसे ही लाज़र बुरी वस्तुएं: परन्तु अब वह यहां शांति पा रहा है, और तू तड़प रहा है। और इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड़हा ठहराया गया है, कि जो यहां से उस पर तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें, और न कोई वहां से इस पार हमारे पास आ सके। उसने कहा, तो हे पिता मैं तुझसे बिनती करता हूं, कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज। क्योंकि मेरे पांच भाई हैं, वह उनके सामने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वह भी इस पीड़ा की जगह आएं। इब्राहीम ने उस से कहा, उन के पास तो मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उन की सुनें। उस ने कहा, नहीं, हे पिता इब्राहीमः पर यदि कोई मरे हुओं में से उन के पास जाए तो वे मन फिराएंगे।" पर इब्राहीम ने, "उस से कहा, कि जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई जी भी उठे तौभी वे उसकी नहीं मानेंगे।" (लूका १६: १९-३१)।

प्रभु यीशु द्वारा कही इस कहानी से यूं तो हम बहुतेरी बाते सीखते हैं, लेकिन एक बड़ी ही खास बात यहां से हम यह सीखते हैं कि पाप का दाम बड़ा ही विशाल है। उस अमीर आदमी के पास जमीन पर सुख विलास की हर एक चीज थी। हो सकता है कि उन चीजों को उस ने अपनी ही मेहनत से हासिल किया होः या हो सकता है कि उस ने अपने पिता की सम्पत्ति को मीरास में पाया हो। पर उसके पास पृथ्वी पर बहुत कुछ था, और वह प्रतिदिन सुख-विलास के साथ रहता था। लेकिन उसने अपने आत्मिक अस्तित्व को भुला दिया था। उसने इस बात की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया था कि एक दिन

जब वह इस ज़मीन को और इस ज़मीन की सब चीजों को हमेशा के लिये छोड़कर चला जाएगा, तो वह जाकर कहां रहेगा? और क्या खाएगा और क्या पीएगा? और क्या पहिनेगा ? उसने अपने जीवन में परमेश्वर को कोई स्थान नहीं दिया, उसकी मर्ज़ी को जानकर उस पर चलने की कोई परवाह नहीं की। उसने अपनी ज़िन्दगी ऐश और सुख-विलास के साथ ही बिता दी। और जब वह इस पृथ्वी पर से उठाया गया और उस जगह पहुंचा जहां उसे हमेशा के लिये रहना था, तब उसे होश आया कि वहां पहुंचने के लिये उसने कितनी बड़ी कीमत चुकाई है! उसने उस हमेशा के सुख को खो दिया जो उसे लाज़र की ही तरह परमेश्वर के पास मिल सकता था। उस ने पृथ्वी पर के नाशमान् भोजन को प्राप्त करने के लिये उस अनन्त भोजन और जीवन के जल को खो दिया जो उसे परमेश्वर के पास पहुंचकर मिल सकता था। और अब वह वहां, उस अनन्तकाल में पानी की एक एक बूंद के लिये तड़प रहा था। पृथ्वी पर वह एक सुंदर महल में रहता था, लेकिन अब वह आग की लपटों में पड़ा हुआ तड़प रहा था। उसकी पोशाक अब आग की लपटें थीं! और उसे वह बदल नहीं सकता था! सो कितना विशाल है पाप का दाम! मित्रो, आज जब हम इस पृथ्वी पर जीवित हैं, हमें चाहियें कि हम अपने जीवनों को जांचें और परखें और देखें कि हम पृथ्वी पर अपना प्रति-दिन का जीवन किस तरह से व्यतीत कर रहे हैं। क्या हम अपना जीवन केवल वर्तमान के लिये ही व्यतीत कर रहे है? भविष्य के लिये, यानि अनन्तकाल के उस जीवन के लिये आज हम क्या कर रहे हैं, जिस में एक दिन हम सब को अवश्य ही प्रवेश करना पड़ेगा?

प्रभु यीशु ने एक बार कहा था, कि तुम अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो जहां न तो कीड़ा और न काई बिगाड़ते हैं और जहां चोर न तो सेंध लगाते और न चुराते हैं। क्योंकि जहां तुम्हारा धन होगा वहीं तुम्हारा मन भी लगा रहेगा। (मत्ती ६: १९-२१)। और एक अन्य जगह यीशु ने इस प्रकार कहा था, कि नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये परिश्रम करो जो अनन्त जीवन तक ठहरता है। (यूहन्ना ६:२७)।

आज यदि आप को वास्तव में अपने जीवन को बचाने की चिन्ता है। यदि आप वास्तव में अपने भविष्य के लिये चिन्तित हैं। यदि आप भविष्य में आनेवाले अपने हमेशा के जीवन को सचमुच में सुरक्षित करना चाहते हैं, तो इसका केवल एक ही उपाय है। और वह यह है, कि आप और हर एक इंसान परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में अपना विश्वास लाए और उसकी आज्ञा को मानकर अपने सब पापों से मन फिरा ले और बपतिस्मा लेकर यीशु का एक अनुयायी बन जाए, और उस में होकर उसका सा जीवन व्यतीत करे। क्योंकि यीशु ने परमेश्वर की बात मानकर क्रूस के ऊपर अपनी मृत्यु के द्वारा हम सब के पापों का दाम चुका दिया है। वह हमारे पापों का प्रायश्चित है। उसमे होकर हम पापी से पवित्र और अधर्मी से धर्मी बन जाते हैं। क्या आज आप अपने प्रत्येक पाप से मन फिराकर उसके पास आएंगे ?

पाप नाश करता है

अपने पाठ में, पिछली बार हमने, पाप के विशाल दाम के ऊपर विचार किया था। और हमने निधर्न लाजर और एक बड़े ही धनवान आदमी के बारे में बाइबल में से देखा था। उस धनवान का नाम क्या था। यह तो हम नहीं जानते। लेकिन वह हमारी ही तरह एक बार इस जमीन पर विद्यमान था और जिन्दा था। कितने वर्ष तक वह इस पृथ्वी पर रहा? यह भी हम नहीं जानते। लेकिन यह एक बात हम सब जानते हैं कि एक बार किसी समय वह इस संसार में था और फिर वह मर गया था। और प्रभु यीशु ने कहा था, कि मरने के बाद अधोलोक में वह उस जगह गया था जहां वह ज्वाला में तड़प रहा था। इसलिये नहीं कि वह एक धनवान था, परन्तु इसलिये क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में वह एक अधर्मी था। उसने अपना भरोसा अपने धन पर रखा था। उसने परमेश्वर को और उसके वचन को और उसकी आज्ञाओं को अपने जीवन में कोई स्थान नहीं दिया था। उसने अपनी जिन्दगी को सिर्फ अपने ही लिये बसर किया था। उसका फलसफा यह था, जैसे कि आज बहुत से लोगों का है, कि खाओं, पीओ और मौज उड़ाओ क्योंकि एक दिन तो मर ही जाना है। लेकिन उसने इस बात पर ध्यान नहीं किया था कि मरने के बाद, यानि इस संसार से चले जाने के बाद उसका क्या होगा? शायद उसने कभी अपने शरीर या अपनी देह के बारे में अवश्य सोचा होगा, कि वह तो जला दी जाएगी या मिट्टी में दबा दी जाएगी। लेकिन उसने अपनी आत्मा की तरफ कभी कोई ध्यान नहीं दिया था। उसने कभी अनन्तकाल के बारे में नहीं सोचा था। उसने कभी स्वर्ग और नरक के बारे में विचार नहीं किया था। या कभी किया भी होगा तो यह सोचा होगा कि स्वर्ग और नरक और कहीं नहीं है पर इस पृथ्वी पर ही है। उसने कभी गम्भीर होकर इस बात पर भी विचार नहीं किया होगा कि मृत्यु के बाद उस

अनन्तकाल में पहुंचकर उसे हमेशा वहीं रहना होगा। और न कभी उसने इस बात को गम्भीरता के साथ देखा होगा कि उस अनन्तकाल में रहने के केवल दो ही स्थान है यानि स्वर्ग और नरक। क्योंकि अगर उस धनवान ने इन सब बातों के बारे में सोचा होता तो पृथ्वी पर उस का जीवन निश्चय ही एक दूसरा ही जीवन होता। और ऐसे ही अनन्तकाल में भी उसका स्थान हमेशा के विनाश के विपरीत हमेशा का आनन्द होता।

लेकिन अब हम अपने बारे में क्या सोचते हैं? हमारा जीवन आज इस पृथ्वी पर किस प्रकार से व्यतीत हो रहा है? क्या हम अपनी मर्जी से चल रहे हैं, या क्या हम अपना जीवन परमेश्वर की इच्छानुसार व्यतीत कर रहें हैं? जीवन के प्रति हमारा कैसा व्यवहार है? क्या हम ऐसा जीवन व्यतीत कर रहे हैं, जिसका उद्देश्य केवल खाना-पीना और मौज उड़ाना ही है? क्या हमने जीवन और मृत्यु के ऊपर गम्भीरता के साथ विचार किया है? क्या हम यहां से उस अनन्तकाल में जाने के लिये आज तैयार हैं? क्या हम अपने परमेश्वर के सामने आने को तैयार हैं?

पवित्र बाइबल में लिखा है, कि हर एक इन्सान को चाहिए कि वह परमेश्वर का भय माने और उसकी सब आज्ञाओं का पालन करे क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है। क्योंकि परमेश्वर मनुष्य के सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, एक दिन न्याय करेगा। (सभोपदेशक १२: १३, १४)। प्रभु यीशु ने न्याय के उस दिन को सम्बोधित करके एक जगह यूं कहा था, कि इस बात से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आएगा जबकि सब मरे हुए लोग उसका शब्द सुनकर जी उठेंगें। जिन्होंनें भलाई की है वे सब जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे। परन्तु जिन्होंने बुराई की है वे सब दन्ड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे। (यूहन्ना ५: २८, २९)। और फिर प्रेरित पौलुस नें पवित्रात्मा की प्रेरणा से लिखकर कहा था कि, धोखा न खाओ, क्योंकि परमेश्वर को ठट्ठों में नहीं उड़ाया जा सकता, क्योंकि मनुष्य जैसा बोएगा वैसा ही वह काटेगा भी: और जो इन्सान अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर ही के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; परन्तु जो इन्सान आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा। (गलतियों

६:७,८)। परमेश्वर के वचन की बातों को हमें हंसी में नहीं उड़ाना चाहिए। यह ऐसी अनन्त बातें हैं जिन्हें उस ने हमें इस जीवन में दिया है और न्याय के दिन वह इन्हीं सब बातों के द्वारा हम सब का न्याय भी करेगा। प्रभु यीशु ने कहा था, कि, "मैं जगत में ज्योति होकर आया हूं ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अंधकार में न रहे। यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता, क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के लिये नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिये आया हूं। जो मुझे तुच्छ जानता है, और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है, उसको दोषी ठहराने वाला तो एक है : अर्थात जो वचन मैं ने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा।" (यूहन्ना १२: ४६-४८)।"

आज हम एक बड़े ही उन्नतिशील युग में जीवन बिता रहे हैं। आज का युग बिजली का युग है। और इस बिजली के युग में आज हमें एक ऐसी चीज मीरास में मिली है जो आज लाखों और करोड़ो लोगों का ईश्वर बन गई हे। लोग उसे पूजते हैं और इतना लगाव हो गया है उस वस्तु से लोगों को आज कि वे घन्टों उसके साथ चिपके बैठे रहते हैं। यहां मेरा अभिप्राय "टी० वी०" से है। धन की ही तरह स्वयं टी० वी० में कोई बुराई नहीं है। किन्तु बुराई उसके दुरुपयोग में है। कुछ लोग घंटो तक बैठकर टी० वी० देख सकते हैं लेकिन परमेश्वर के किसी काम को करने के लिये उन के पास समय नहीं होता। बहुतेरे लोग परमेश्वर की आराधना उपासना तक करने को नहीं आते क्योंकि वे टी० वी० पर अपने किसी खास प्रोग्राम को "मिस" नहीं करना चाहते। उनका ईश्वर उनका टी० वी० है। वे उस से अलग नहीं होना चाहते, उसे छोड़ना नहीं चाहते। और ऐसे ही कुछ लोगों का शौक फिल्मी पत्रिकाएं और नौवेल पढ़ना है। वे उन्हें रोज पढ़ सकते हैं और घंटों तक पढ़ सकते हैं - किन्तु परमेश्वर के वचन की पुस्तक पर वे कभी ध्यान भी नहीं देते। परमेश्वर के वचन को पढ़ने का उनके पास समय नहीं है। उसके वचन को सुनने का उनके पास समय नहीं है। और फिर ऐसे ही कुछ लोगों का समय और पैसा सिनेमा देखने में जाता है। परमेश्वर-भक्ति के लिये उनके पास समय नहीं होता, लेकिन सिनेमा देखने के लिये वे समय निकाल ही लेते हैं। परमेश्वर के

सुसमाचार प्रचार के काम के लिये देने के लिये वे गरीब हैं, लेकिन सिनेमा देखने के लिये उनके पास पैसे निकल ही आते हैं। ये बातें मैं आप को इसलिये बता रहा हूं क्योंकि मैं जानता हूं कि यह बातें बिल्कुल सच हैं। मैं यह सब रोज देखता हूं और ऐसे लोगों को व्यक्तिगत रुप से जानता हूं। लेकिन इस बात पर विचार करके देखें कि इन सब बातों से इन्सान को मिलता क्या है? एक दिन जब वह इस पृथ्वी पर से उठाया जाएगा, तब इन में से कौन सी चीज वह अपने साथ लेकर जाएगा? इन सब चीजों से उसे अन्त में क्या लाभ होगा?

शायद आप उस धनवान की तरह नहीं हैं जो अपने धन के नशे में मतवाला होकर संसार में ऐसा खो गया था कि उसे परमेश्वर और उसकी आज्ञाओं का और अपनी आत्मा का कोई ध्यान नहीं रहा था और अन्त में इसी कारण से उसे अपने प्राणों को हमेशा के लिये नरक की आग में खोना पड़ा था। लेकिन हो सकता है कि आज आप किसी और चीज के नशे में मतवाले हैं; हो सकतां हैं, संसार की किसी और वस्तु ने आपकी आंखें आज बन्द कर रखी हैं। पर यदि आप अपना मन नहीं फिराएंगे, और परमेश्वर की आज्ञा को मानकर उसके पास नहीं लौटेंगे, तो याद रखिए, उसी वस्तु के कारण आप को अनन्तकाल में हमेशा के विनाश के दन्ड का सामना करना पड़ेगा। और कौन जानता है उस दिन को कि वह हम पर कब आ पड़े ?

परमेश्वर की पुस्तक बाइबल में लिखा है, कि, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए" (यूहन्ना ३:१६)। बीमारी मनुष्य को वास्तव में नाश नही करती; आग मनुष्य को वास्तव में नाश नहीं करती; तलवार मनुष्य को वास्तव में नाश नहीं करती और दुनिया में कोई बड़े से बड़ा बम भी इतनी ताकत नहीं रखता कि वह इन्सान के अस्तित्व को हमेशा के लिये खत्म कर दे। केवल एक ही ऐसी चीज है दुनिया में जो मनुष्य को नाश करती है, और वह है "पाप"। लेकिन परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया; ताकि जो कोई उस में विश्वास लाए वह नाश न हो पाप के कारण, परन्तु वह अनन्त जीवन पाए। कैसा महान है परमेश्वर का प्रेम और उसका अनुग्रह ! उसने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया ताकि हम नाश न हों !

परमेश्वर का सामर्थी वचन स्वर्ग की महिमा को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया। वह एक इन्सान बना और उसने एक इन्सानी जिन्दगी को ज़मीन पर बसर किया। और फिर उसने अपने पवित्र जीवन को क्रूस की शर्मनाक और भयानक मौत के हवाले कर दिया। बाइबल में लिखा है, कि वह हमारे पापों का प्रायश्चित है यानी उसने अपनी मृत्यु के द्वारा हम सब के पापों का दाम भर दिया है। और बाइबल कहती है, कि जो कोई भी अब यीशु में विश्वास लाएगा और पाप से अपना मन फिराएगा और यीशु के नाम से अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेगा, और यीशु के जीवन का पालन करेगा, तो वह अपने सब पापों से छुटकारा पाकर परमेश्वर के स्वर्ग में हमेशा की जिन्दगी पाएगा। (मरकुस १६:१६; प्रेरितों २:३८)। दुनिया में हर एक इन्सान पापी है, और पाप के कारण वह परमेश्वर से अलग है। किन्तु परमेश्वर ने हम सबसे ऐसा प्रेम रखा कि उसने यीशु मसीह में होकर खुद हम सबके पापों का दन्ड अपने ऊपर उठा लिया और हमे यह अवसर दिया कि हम यीशु के पास आकर, और उसमें होकर पाप से मुक्त होकर परमेश्वर के पास वापस आ जाएं। पाप इन्सान को नाश करता है। लेकिन यीशु इन्सान का उद्धार करता है। मनुष्य को चाहिए कि पाप से अपना मन फिराकर यीशु के पास आ जाए। क्या आप आएंगें ?

पाप का कारण

सचमुच में हम सब के लिये यह बड़े ही सौभाग्य की बात है कि हमारे पास अब यह अवसर है कि हम परमेश्वर के उस सामर्थ पूर्ण वचन का अध्ययन करेंगे जिसके द्वारा एक दिन हम सब का न्याय होगा। बहुतेरे लोग इस जगत में ऐसे हैं जो हमारी तरह सुन नहीं सकते, बहुतेरे पढ़ नहीं सकते। और बहुत से ऐसे भी हैं जो बीमारी या किसी प्रकार के जोखिम के कारण इस सुंदर अवसर का लाभ नहीं उठा सकते। मेरा ध्यान उन लोगों की तरफ भी जाता है जो कुछ दिन पहिले या कुछ ही घन्टों पहिले हम सब की ही तरह इस पृथ्वी पर विद्यमान थे, परंतु अब वे इस संसार में नहीं हैं। और जैसा जीवन उन्हों ने हमारी इस पृथ्वी पर व्यतीत किया था, या जो भी निश्चय उन्हों ने अपने जीवन में किया था उसी के अनुसार वे सब अब हमेशा के उस अनन्तकाल में रहेंगे जिसे परमेश्वर ने धर्मीयों और अधर्मियों के लिये ठहराया है। मित्रो, मैं आप को बताना चाहता हूं कि मनुष्य का जीवन इस पृथ्वी पर बड़ा ही मूल्यवान है। उसका मूल्य सोने - चांदी और जगत की मूल्यवान् वस्तुओं से भी बहुत बड़ा हैं। इसीलिये प्रभु यीशु ने एक बार कहा था कि, यदि कोई मनुष्य सारे जगत को भी प्राप्त करले परन्तु अन्त में स्वयं अपने ही प्राणों की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राणों के बदले में क्या देगा?

पवित्र बाइबल कहती है, "तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो यदि कोई संसार से प्रेम रखता है तो उस में परमेश्वर का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा, और जीविका का घमन्ड, वह परमेश्वर की ओर से नहीं है परन्तु संसार ही की ओर से है। और संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों

मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है वह सर्वदा बना रहेगा।" (२ यूहन्ना २:१५-१७)।

इंसान की सबसे बड़ी कमज़ोरी उसकी अभिलाषा है। प्रत्येक पाप जो मनुष्य करता है उसका कारण उसके मन की अभिलाषा होती है। बाइबल कहती है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर, और फंसकर परीक्षा में पड़ता है। और अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जन्म देती है और पाप का परिणाम मृत्यु होता है। (याकूब १: १३,१४)। जब इन्सान किसी चीज़ की तरफ देखकर अपने मन में उसे पाने की लालसा करता है, तो उस समय वह इस बात पर ध्यान नहीं देता कि उसका परिणाम क्या निकलेगा। उस समय तो वह सिर्फ उस मज़े या आनन्द को ही देखता है जो उस वस्तु से उसे प्राप्त होगा। प्रत्येक पाप का आरम्भ मनुष्य के मन से होता है। क्योंकि मनुष्य के मन में ही सबसे पहिले अभिलाषा उत्पन्न होती है। इसी कारण बाइबल में एक जगह इस प्रकार लिखा हुआ है, कि, "सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर क्योंकि जीवन का मूल स्त्रोत वही है।" (नीतिवचन ४:२३)। मनुष्य का मन, जिसके भीतर अभिलाषा उत्पन्न होती है, प्रत्येक पाप की चौकी है इसलिये जो मनुष्य अपने मन की रखवाली करता है वह अपने जीवन की रक्षा करता है। परन्तु यह काम इन्सान के लिये वास्तव में बड़ा ही मुश्किल है। वह बड़े-बड़े हवाई जहाज़ और जल-पोत बना सकता है और उन्हें अपनी मर्ज़ी के मुताबिक कहीं पर भी मोड़कर और चलाकर दूर-दूर तक ले जा सकता है और कहीं पर भी उन्हें ठहरा सकता है। वह बड़े-बड़े जानवरों को और हर प्रकार के पशु और पक्षियों को अपने वश में करके उनसे अपनी इच्छानुसार काम करवा सकता है। लेकिन वह स्वयं अपने ही मन को नहीं सम्भाल सकता। मन के बारे में उसका व्यवहार अकसर उस छोटे से चूहे के समान बन जाता है जो चूहेदान में लगे छोटे से रोटी के टुकड़े की तरफ आकृषित होकर उसकी तरफ बढ़ने लगता है और कुछ ही पल में वह उस चूहेदान में फंस जाता है। फिर वह उसके भीतर छटपटाता है, उस से मुक्त होने की कोशिश करता है, परन्तु नहीं हो पाता, और उसका अंजाम मौत होता है।

रुपया या पैसा मनुष्य के लिये संसार में एक ऐसा ही लालच है। रुपया हासिल करने के लिये लोग चोरी करते हैं, और डाके डालते हैं और लूटते हैं। रुपए के लोभ में पड़कर लोग झूठ बोलते है, और घूस लेते हैं। पैसे से आकृषित होकर लोग अपने ईमान को और अपनी इज्जत को और अपने आपको भी बेच डालते हैं। बाइबल में हम ऐसे अनेक लोगों के बारे में पढ़ते हैं जिन्हों ने धन प्राप्त करने की अभिलाषा से खिंचकर अपने आपको मौत के मुंह में ढकेल दिया था। हम आकान के बारे में पढ़ते हैं, जिसने उस धन का लालच किया था जिसे लेने को परमेश्वर ने मना किया था, और फलस्वरुप उसे अपने परिवार समेत अपने प्राणों की हानि उठानी पड़ी थी। फिर हम हन्ना और सफिरा के बारे में भी पढ़ते हैं जिन्हों ने रुपयों का लालच करके पवित्रात्मा से झूठ बोला था, और परिणामस्वरुप उन्हें भारी दन्ड मिला था। और ऐसे ही हम यहूदा इस्कीरियोती के बारे में पढ़ते हैं जिसने चांदी के तीस सिक्कों के लालच में आकर अपने ही प्रभु को उस के दुश्मनों के हाथों बेच दिया था।

और आज भी पृथ्वी पर ऐसे लोगों की कोई कमी नहीं है जो अपने आप को, और अपने प्राणों को और अपनी आत्मा को धन के लालच में आकर नाश कर रहे हैं। पवित्र बाइबल में एक जगह हम यूं पढ़ते हैं: कि, "न हम जगत में कुछ लाए हैं और न कुछ ले जा सकते हैं। और यदि हमारे पास खाने और पहिनने को हो तो इन्हीं पर संतोष करना चाहिए। पर जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा और फंदे, और बहुतेरी व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फंसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं और विनाश के समुद्र में डूबा देती हैं। क्योंकि रुपए का लोभ सब प्रकार की बुराईयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना- प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है।" (१ तीमुथियुस ६:७-१०)।

यहां इस बात को समझना बड़ा ही जरुरी है कि स्वयं रुपये या पैसे में कोई बुराई नहीं है। पर बुराई वास्तव में रुपए के "लोभ" में है। लोभ, या अभिलाषा, या लालसा सब बुराईयों की जड़ है। लोभ में पड़कर और अभिलाषा से खिंचकर मनुष्य पाप करता है। यह सच है, कि तरह-तरह की

परीक्षाएं हमारे सामने आती हैं और प्रतिदिन हम परीक्षाओं से होकर गुज़रते हैं। परीक्षा में पड़ना कोई पाप नहीं है। परन्तु परीक्षा के कारण लोभ, या लालसा या अभिलाषा में पड़कर गलत काम करना बुराई है। हम प्रभु यीशु मसीह के बारे में देखते हैं, कि उसके सामने भी कई बार बड़ी ही वास्तविक परीक्षाएं आई थीं लेकिन उसने कभी भी कोई पाप नहीं किया था, क्योंकि उसके मन में कोई लोभ या अभिलाषा उत्पन्न नहीं हुई थी। जब उसने चालीस दिन और रात प्रार्थना करने में लगातार बिताए थे, तो उसके सामने बहुतेरी परीक्षाएं आई थीं। लेकिन उसने एक भी पाप नहीं किया था। भूखा रहकर उसने कभी कोई पाप नहीं किया। निर्धन रहकर उसने कभी कोई पाप नहीं किया था। उसके पास अद्‌भुत शक्ति थी परन्तु उसने अपनी शक्ति से किसी को भी कोई हानि नहीं पहुंचाई थी। उसने दुख सहा लेकिन अपने दुख देनेवालों को नाश नहीं किया। परमेश्वर की मर्ज़ी को पूरा करने के लिये उसने क्रूस के ऊपर दर्दनाक मौत को सह लिया था, और हर तरह के अपमान को अपने ऊपर उठा लिया था। यदि उसे अपने जीवन को बचाने की अभिलाषा होती; यदि उसे संसार में इज्ज़त, और शोहरत प्राप्त करने की और बड़ा बनने की अभिलाषा होती, तो वह यह सब कुछ कर सकता था। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया, क्योंकि वह जानता था कि परमेशवर की इच्छा उसके बारे में क्या है।

बाइबल कहती है कि, " मसीह तुम्हारे लिये दुख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो। न तो उसने कोई पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आपको सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था। और वह आप ही हम सब के पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं।" (१ पतरस २:२१-२४)। सो यदि हम अपने जीवन में यीशु मसीह को अपना आदर्श बना लेंगे तो परीक्षाओं के होते हुए भी हम लोभ और अभिलाषा में नहीं पड़ेंगे। प्रभु यीशु के जीवन का उद्‌देश्य था परमेश्वर की मर्ज़ी को पूरा करना और यही हमारे जीवनों का भी

उद्देश्य बन जाएगा। परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह हमें एक नया जीवन और एक पवित्र मन दे देता है।

वह हमारे सब पापों से हमारा उद्धार करता है, और हमें स्वर्ग में प्रवेश करने की आशा देता है।

सो यदि आप ने अपने जीवन को अभी तक भी पूरी तरह से उसे नहीं दिया है, तो मेरा आपसे आग्रह है कि आप उसमें अपने पूरे मन से विश्वास लाएं, और हर एक बुराई से अपना मन फिराएं, और अपने सब पापों की क्षमा के लिये उसके नाम से बपतिस्मा लें।

पाप के कारण

"सब ने पाप किया है, और इसलिये सब परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" ये शब्द पवित्र बाइबल के हैं। और ये शब्द हमारा ध्यान इस बात पर दिलाते हैं कि पाप का दाम कितना बड़ा और कैसा भयानक है। परमेश्वर की महिमा से रहित होने का अर्थ है, परमेश्वर से अलग हो जाना। परमेश्वर आत्मा है। यानि इन्सान की तरह उसकी कोई देह या रुप नहीं है। वह निराकार है। और वह अनन्त है। यानि वह सदा से है और हमेशा रहेगा। और अनन्त परमेश्वर ने आरम्भ में इन्सान को अपने ही जैसा आत्मिक बनाया था - मनुष्य की देह को मिट्टी से बनाकर परमेश्वर ने उस के भीतर आत्मा को रखा था। सो इस प्रकार हम देखते हैं कि मनुष्य का स्वभाव दोहरा है। बाहर से तो उस की देह जगत की अन्य सभी वस्तुओं की तरह नाशमान है। लेकिन भीतर से उसका आत्मिक व्यक्तित्व परमेश्वर की ही तरह अविनाश और अनन्त है। मनुष्य पशुओं के समान नहीं है, जिनका अस्तित्व मरने पर समाप्त हो जाता है। परन्तु परमेश्वर की समानता पर होने के कारण, यानि एक आत्मिक प्राणी होने के कारण, मनुष्य उसी की तरह हमेशा वर्तमान और विद्यमान रहेगा। मृत्यु, मनुष्य के जीवन का अन्त नहीं है परन्तु वास्तव में मनुष्य के जीवन का आरम्भ है। एक ऐसा आरम्भ जिसका अन्त कभी नहीं होगा। इसलिये यदि मनुष्य इस जीवन में पाप के कारण परमेश्वर से अलग है, तो इस जीवन की समाप्ति पर वह हमेशा परमेश्वर से अलग रहेगा। क्योंकि बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर की ओर से हर एक इंसान के लिये एक बार मरना और फिर न्याय का होना नियुक्त है। (इब्रानियों ९:२७)।

सो हम देखते हैं कि पाप का दाम केवल इसी जीवन तक सीमित नहीं है, परन्तु यह एक ऐसा विशाल दाम है कि मनुष्य इसका हिसाब कभी नहीं चुका

सकेगा। पाप के कारण वह इस वर्तमान जीवन में परमेश्वर से अलग है, और पाप के ही कारण वह आनेवाले हमेशा के जीवन में भी परमेश्वर से अलग होकर रहेगा। उन लोगों के बारे में प्रभु यीशु ने एक बार कहा था, कि वहां वे अनन्त दन्ड भोगेंगे (मत्ती २५:४६), और एक अन्य स्थान पर यीशु ने कहा था, कि वहां रोना और दांत पीसना होगा। (मत्ती २५:३०)। कभी-कभी लोग किसी इन्सान पर आए दुख मुसीबतों को देखकर अकसर कह देते हैं कि उसे अपने पापों का फल मिल रहा है, या वह अपनी करनी का फल भोग रहा है। और कई बार लोगों को अपने गलत कामों का नतीजा भुगतान भी पड़ता है। जैसे कि एक शराब पीने वाले को बीमारी और गरीबी का सामना करना पड़ता है। या एक चोरी करनेवाले को डर और शर्म का और पिटाई का और जेल का सामना करना पड़ता है। पर पाप का परिणाम बड़ा ही भयानक है। सरकार के किसी कानून को तोड़ने पर इन्सान को जुर्माना हो सकता है। किसी बड़े से बड़े अपराध की सजा उमर कैद या फांसी की सजा हो सकती है। लेकिन पाप का दन्ड हमेशा की वह मौत है जिस से इन्सान को कभी कोई छुटकारा नहीं मिल सकता, वह एक ऐसी वास्तविकता है जहां हमेशा का रोना और दांतो का पीसना होगा- और जहां अनन्त दन्ड होगा। और जिसका कभी अन्त नहीं होगा।

पृथ्वी पर मृत्यु को अकसर छुटकारा भी कह दिया जाता है। जैसे कि अगर कोई बहुत लम्बी बीमारी के बाद मरता है, तो लोग कह देते हैं, "कि चलो अच्छा हुआ बेचारे को बीमारी से छुटकारा तो मिला।" लेकिन आत्मिक मृत्यु के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता। क्योंकि आत्मिक मृत्यु एक छुटकारा नहीं परन्तु अनन्त विनाश का दन्ड है। मृत्यु का तात्पर्य अलग होने से है। प्राण या आत्मा जब देह को छोड़ देते हैं, और देह से अलग हो जाते हे तो हम उसे मृत्यु कहते हैं। ऐसे ही जब मनुष्य का आत्मिक सम्बन्ध पाप के कारण परमात्मा से छूट जाता तो मनुष्य की आत्मिक मृत्यु हो जाती है इसका मतलब यह नहीं है कि उसके अस्तित्व का अन्त हो जाता है, या वह वर्तमान नहीं रहता- परन्तु मृत्यु का वास्तविक अर्थ है जीवन के स्त्रोत से अलग हो जाना। जब प्रभु यीशु ने कहा था, कि अधर्मी अन्नन्त दन्ड भोगेंगे या वे एक ऐसी जगह में प्रवेश करेंगे जहाँ हमेशा का रोना और दांतों का पीसना होगा तो प्रभु के

कहने का ठीक यही अर्थ था, कि वे हमेशा के लिये परमेश्वर से अलग होकर एक ऐसी जगह में रहेंगे जहां अत्यन्त पीड़ा और कष्ट होगा। उस जगह को बाइबल में नरक और आग की झील भी कहा गया है, और उसी जगह को दूसरी मृत्यु कहकर भी सम्बोधित किया गया है। (प्रकाशित. २१:८)। क्योंकि एक मृत्यु तो वह है जिसमें आत्मा शरीर से अलग हो जाती है, लेकिन यह दूसरी मृत्यु ऐसी मृत्यु है जिसमें इन्सान हमेशा के लिये परमेश्वर से अलग हो जाता है।

पवित्र बाइबल में लिखा है, कि, "धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा। क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।" (गलतियों ६:७,८)। शरीर के लिये बोने का अर्थ है शरीर के काम करना, और आत्मा के लिये बोने का अर्थ है आत्मा के काम करना। जब मनुष्य अपने शरीर की अभिलाषाओं के अनुसार चलता है, तो वह शरीर के काम करता है। पर जो इन्सान परमेश्वर के पवित्र आत्मा के कहने के अनुसार चलता है वह आत्मा के काम करता हे। यानी वह केवल वही काम करता है जिनके विषय में पवित्रात्मा ने परमेश्वर के वचन की पुस्तक में आज्ञा दी है। परमेश्वर की पुस्तक पवित्र बाइबल में लिखा है, कि, शरीर के काम तो प्रकट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्ती-पूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, और इन के ऐसे और काम हैं ऐसे - ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे। पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है; ऐसे - ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं। और जो मसीह यीशु के हैं उन्हों ने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।" (गलतियों ५:१९-२४)।

शारीरिक लालसाएं और अभिलाषाएं मनुष्य को पाप करने पर बाध्य करती हैं और पाप उस मृत्यु को उत्पन्न करता है, जिसका अर्थ है परमेश्वर से अलग होकर उससे दूर रहना। पर जो इन्सान प्रभु यीशु मसीह को अपना मुक्तिदाता मान लेता है; जो अपना जीवन यीशु को सौंप देता है; जो अपना

जीवन उसमें होकर व्यतीत करने का निश्चय कर लेता है, वह फिर आगे को पाप नहीं करता। क्योंकि वह जानता है, कि उसने अपना समपूर्ण शारीरिक जीवन उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। इसका मतलब यह नहीं है कि वह एक मसीही होकर शरीर में नहीं रहता या शारीरिक जीवन नहीं व्यतीत करता। पर इसका अर्थ वास्तव में यह है, कि वह शरीर में रहकर भी शरीर के काम नहीं करता; वह संसार मे रहकर भी सांसारिक अंधकार के काम नहीं करता। पवित्र बाइबल में लिखा है, "सो अब जो मसीह यीशु के हैं, उन पर दन्ड की आज्ञा नहीं क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं बरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।" (रोमियों ८:१)।

मनुष्य को पाप के भयानक दन्ड और परिणाम से केवल यीशु मसीह ही बचा सकता है। और कोई नहीं बचा सकता। और कोई रास्ता नहीं है। और कोई ताकत नहीं है। बाइबल कहती है, "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों ४:१२)।

सो यदि आपने अभी तक भी अपना जीवन प्रभु यीशु मसीह को नहीं दिया है; यदि आप ने अभी तक भी अपने सारे मन से उस में विश्वास लाकर उसे ग्रहण नहीं किया है; और यदि आपने सब पापों से अपना मन फिराकर, अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु की आज्ञानुसार बपतिस्मा नहीं लिया है। तो आप अभी भी अपना जीवन अपनी शारीरिक लालसाओं और अभिलाषाओं के अनुसार व्यतीत कर रहे हैं। और शारीरिक लालसाएं तथा अभिलाषाएं पाप को ही उत्पन्न करती हैं, और पाप वह वस्तु है जो मनुष्य को परमेश्वर से अलग रखती है। अगर आप एक बार इस बात को वास्तव में समझ लें कि परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस के ऊपर मरा था। और यदि आप सारे मन से उस में विश्वास करके उसकी आज्ञा को मान लें, तो उसके द्वारा आपको पापों की क्षमा और मुक्ति मिल सकती है। क्योंकि परमेश्वर ने उसे क्रूस पर उसकी मृत्यु के द्वारा सारे जगत के पापों का छुटकारा ठहराया है। वह आप के पापों का प्रायश्चित है।

मनुष्य पृथ्वी पर अपने परिश्रम के द्वारा पाप को बढ़ा रहा है, और पाप के बोझ से दिन-बा दिन वह दबता चला जा रहा है। परन्तु प्रभु यीशु ने जैसा कि उस समय लोगों से कहा था, आज भी वह यही कह रहा है, कि "हे सब परिश्रम करने वालो और बोझ से दबे हुए लोगो मेरे पास आओः मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ (या मेरा बोझ) अपने ऊपर उठा लोः और मुझ से सीखोः क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं : और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे।" (मत्ती ११:२८,२९)।

कोई इन्सान जमीन पर इस से बड़ा और कोई काम नहीं कर सकता, कि वह यीशु के पास आकर अपनी सारी जिन्दगी को हमेशा के लिये उसके हवाले कर दे।

क्या आप ने अपने जीवन को उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह को सौंप दिया है? यदि नहीं, तो मेरी आशा है कि आप जल्दी ही ऐसा करेंगे। क्योंकि उसके अतिरिक्त पाप से उद्धार पाने का और कोई मार्ग नहीं है। पवित्र बाइबल कहती है कि एक दिन ऐसा आएगा जबकि पृथ्वी और उस पर की सब वस्तुएं नाश हो जाएंगी, पर जो इन्सान परमेश्वर की इच्छा पर चलता है वह हमेशा परमेश्वर के साथ उसके स्वर्ग में विद्यमान रहेगा।

पाप की मज़दूरी

इस समय जबकि आप के सामने मैं परमेश्वर के वचन की बातों को रखने जा रहा हूं, मेरा ध्यान मनुष्य की एक सबसे बड़ी और पुरानी समस्या के ऊपर जाता है। या यूं कहिए कि यह एक ऐसी समस्या है जो कि सभी अन्य समस्याओं की एक समस्या है। यूं तो देखा जाए तो आज हम सब एक ऐसे जगत में सांस ले रहे हैं जो भिन्न-भिन्न प्रकार की समस्याओं से भरा पड़ा है। जगह-जगह दंगे-फसाद हो रहे हैं। खून बहाया जा रहा है और लूट - पाट हो रही है। तोड़-फोड़ की घटनाएं अब एक आम बात बन गई हैं। आग लगाकर और बम विस्फोटों के द्वारा लोगों की जान और माल को नुकसान पहुंचाया जा रहा है। लोगों को एक और विश्व-युद्ध का खतरा लग रहा है। हमारे समाचार पत्र ऐसी-ऐसी बातों से प्रतिदिन भरे पड़े रहते हैं। पर इन सब बातों का कारण क्या है? इन्सान ऐसा क्यों है कि वह दूसरे इन्सान से बैर रखता है? पवित्र बाइबल के अनुसार, परमेश्वर ने इन्सान को अपने स्वरुप और अपनी समानता पर आरम्भ में बनाया था। परन्तु आज जो कुछ भी मनुष्य में हम देखते, सुनते और पाते हैं उसमें हमें परमेश्वर के स्वभाव की ज़रा सी भी झलक दिखाई नहीं पड़ती। आज इन्सान जैसे काम कर रहा है उस से तो शैतानियत की बू आती है।

प्राचीन काल में एक समय था जबकि परमेश्वर ने धर्मी नूह और उसके परिवार को छोड़कर पृथ्वी पर के सब लोगों को एक महाजल-प्रलय भेजकर नाश कर दिया था। क्योंकि बाइबल हमें बताती है, कि उस वक्त लोग इतने अधिक पापी और अधर्मी बन गए थे कि यहां तक कि उन के सोच-विचार में भी जो कुछ आता था वह सब पाप और अधर्म ही होता था। यानि वे लोग अच्छाई और भलाई के बारे में सोचते भी नहीं थे। उनके विचार में जो कुछ भी

उत्पन्न होता था वह सब बुरा ही होता था। वे लोग झूठे, धोखेबाज़, मयारहित, हत्यारे और अपने सब कामों से परमेश्वर के बैरी बन गए थे। और इसलिये परमेश्वर ने उन सब को जमीन पर से मिटा डाला था। इस में कोई संदेह नहीं, कि आज हमारा यह संसार वर्तमान है तो केवल परमेश्वर के अनुग्रह ही से वर्तमान है। क्योंकि वह नहीं चाहता कि सब लोग नाश हों, परन्तु वह चाहता है कि सब को मन फिराव का अवसर मिले, और यह कि उस के न्याय के दिन के आने से पहिले लोग अपने-अपने अधर्म के कामों से मन फिराकर उसके पास वापस लौट आएं।

पवित्र बाइबल में लिखा है, परमेश्वर कहता है कि "जो प्राणी पाप करेगा वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा, और न पिता पुत्र का: धर्मी को अपने ही धर्म का फल, और दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मिलेगा। परन्तु यदि दुष्ट जन अपने सब कामों से फिर कर मेरी सब विधियों का पालन करे और न्याय और धर्म के काम करे, तो वह न मरेगा, वरन जीवित ही रहेगा। उस ने जितने अपराध किए हों, उन में से किसी का स्मरण उसके विरुद्ध न किया जाएगा: जो धर्म का काम उस ने किया हो, उस के कारण वह जीवित रहेगा। प्रभु यहोवा की यह बाणी है, क्या मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न होता हूँ? क्या मैं इस से प्रसन्न नहीं होता कि वह अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे? परन्तु जब धर्मी अपने धर्म से फिरकर टेढ़े काम, और दुष्ट के सब घृणित कामों के अनुसार करने लगे, तो क्या वह जीवित रहेगा? जितने धर्म के काम उसने किए हों, उनमें से किसी का स्मरण न किया जाएगा। जो विश्वासघात और पाप उस ने किया हो उसके कारण वह मर जाएगा।" (यहेजकेल १८:२०-२४)।

सो हम देखते हैं कि पाप का परिणाम कितना भयानक है। पाप के कारण इन्सान मर जाता है। बाइबल कहती है, कि, पाप की मज़दूरी मृत्यु है। मेरे विचार में यदि मनुष्य इस "मृत्यु" शब्द का अर्थ वास्तव में समझ ले तो वह पाप करने से डरने लगेगा। यह मृत्यु शारीरिक मृत्यु नहीं है, जिसका सामना मनुष्य और पशुओं को एक साथ करना पड़ता है। यह मौत जिस्म की मौत नहीं है, जिसका सामना अधर्मी और धर्मी दोनों को एक समान करना पड़ता है।

परन्तु यह मृत्यु आत्मिक मृत्यु है; यह मृत्यु हमेशा की अनन्त मृत्यु है; और इस मृत्यु का अर्थ है परमेश्वर से अलग और दूर होकर हमेशा के लिये एक ऐसी जगह जिन्दा रहना, जिसके बारे में बाइबल कहती है कि वह आग और गन्धक की एक विशाल झील है; और वहां रोना और दांतों का पीसना होगा। जैसे कि जिस्मानी मौत में हम देखते हैं, कि मनुष्य अपने शरीर को छोड़कर उस से अलग हो जाता है। ऐसे ही आत्मिक मृत्यु भी है, जिसमे मनुष्य परमेश्वर से हमेशा के लिये अलग होकर उस से दूर रहता है। आग और गन्धक की उस झील में जिसे नरक कहा जाता है। और परमेश्वर से अलग और दूर होने का केवल एक ही कारण है, और वह कारण है पाप। जब मनुष्य अपने शरीर को छोड़कर उससे अलग हो जाता है, तो उसका कारण होता है बीमारी, या दुर्घटना या बुढ़ापा। लेकिन परमेश्वर से अलग होने का कारण केवल एक ही है और वह कारण है पाप। स्वयं अपने ही पापों के कारण सब लोग आज परमेश्वर से दूर हैं।

जब तक मनुष्य पाप में है वह परमेश्वर से दूर है। वह अपने दिल को बहलाने के लिये उस से प्रार्थना कर सकता है और उस के भजन गा सकता है, लेकिन अपने पाप के कारण वह उस से अलग है। लेकिन पाप क्या है? बाइबल में लिखा है, कि जो कुछ भी परमेश्वर के नियम, और उस की इच्छा और उसके स्वभाव के विरुद्ध है वह सब पाप है। (१ यूहन्ना ३:४)। परमेश्वर की नज़र में प्रत्येक पाप पाप है। यानि उस की दृष्टि में कोई पाप छोटा या बड़ा नहीं है। यदि कोई मनुष्य डकैती और कत्ल करता है तो वह उसकी नज़र में पाप है। और यदि कोई इन्सान झूठ बोलता है या अपने मन में बैर और ईर्ष्या रखता है तो वह भी परमेश्वर की नज़र में पाप है। और जब तक वे दोनों अपने-अपने पाप से मन नहीं फिरा लेंगे वे अपने ही पाप के कारण नाश होंगे।

बाइबल हमें यह भी बताती है, कि पृथ्वी पर सब लोगों ने पाप किया है और सब के सब परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। और यह बात सच है। क्योंकि कौन सा ऐसा इन्सान है जिसने कभी कोई पाप न किया हो? जिसने कभी झूठ न बोला हो; जिसके मन में कभी कोई बुरा विचार न आया हो? और क्योंकि जगत में सब लोगों ने पाप किया है, इसलिये सब को पाप से

उद्धार पाने की आवश्यकता है। बाइबल कहती है, कि परमेश्वर ने सारे जगत से ऐसा महान प्रेम रखा कि उसने जगत का उद्धार करने के लिये अपने एकलौते पुत्र यीशु मसीह को जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये बलिदान कर दिया, ताकि उसके द्वारा जगत के सब लोग अपने-अपने पापों से मुक्ति पाकर परमेश्वर के साथ अपना मेल कर लें। (यूहन्ना ३:१६; रोमियों ३:२३-२६)।

यही सुसमाचार है। यही एक खुशी का पैग़ाम है। परमेश्वर कहता है, कि यदि मनुष्य अपने सब अधर्म से अपना मन फिरा ले, तो चाहे उसने कितने भी पाप क्यों न किए हों, अगर वह अपने सब पापों से अपना मन फिराकर मेरे पास वापस लौट आए, तो मैं उसके सब पापों को क्षमा कर दूंगा। कितना बड़ा और महान सुसमाचार परमेश्वर ने हमे दिया है। वह हमारे सब पापों को, और सब गलतियों को क्षमा करने को तैयार है; क्योंकि वह हमसे प्रेम रखता है और नहीं चाहता कि हम में से कोई भी इन्सान अपने पाप के कारण नरक में नाश हो। और अपने उस महान प्रेम का सबूत उसने हमें इस बात में दिया है, कि हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिये हमारे पापों के बदले में उसने अपने ही पुत्र को बलिदान कर दिया। मैं आप को बताना चाहता हूँ, कि एक जगह बाइबल में यूं लिखा है, कि जो पाप से अज्ञात था, यानी यीशु, उसी को परमेश्वर ने हमारे लिये पाप ठहराया, ताकि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं। (२ कुरिन्थियों ५:२१)।

इसलिये आपके जीवन में आज यदि कोई भी बुराई है या कोई भी अधर्म या पाप है; तो आप उससे आज छुटकारा पा सकते हैं। अगर आप यीशु मसीह में विश्वास करेंगे अपने सारे मन से, और यीशु की आज्ञा मानकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेंगे तो परमेश्वर आप के सब पापों को माफ करेगा। यीशु के द्वारा, उसके बताए हुए मार्ग पर चलकर, आप एक नया जीवन प्राप्त कर सकते हैं। याद रखें, कि पाप मनुष्य के जीवन को नाश करता है, परन्तु परमेश्वर का पुत्र, यीशु मसीह हमें एक नया जीवन देता है। वह एक डॉक्टर की तरह है, जिसके पास हमें बचाने का ईलाज है, और हमारा कर्त्तव्य यह है कि हम पूरे भरोसे और विश्वास के साथ उसके पास आएं। एक बार फिर, मैं आप से आग्रह करके पूछना चाहूंगा, कि क्या आप उसके पास आएंगे?

पाप का स्वभाव

और अब मैं आप को पाप के स्वभाव से परिचित कराना चाहता हूं। पाप का स्वभाव उस खमीर की तरह है जिसे बहुत से गुंधे हुए आटे में मिलाने से सारा-का-सारा आटा खमीरा बन जाता है। पाप का आरम्भ एक छोटे से बीज की तरह होता है। उस बीज़ को लेकर आप उसे मिट्टी में दबा दीजिए। फिर क्या होगा? कुछ ही समय के बाद वह एक छोटा सा पौधा बनकर बाहर निकल आएगा। फिर वह धीरे-धीरे बढ़ेगा-उसमें नई टहनिएं लगेंगी और देखते-ही देखते वह एक बड़ा और मज़बूत पेड़ बन जाएगा। एक छोटे से पौधे को उखाड़ना बड़ा ही आसान काम है। पर धीरे-धीरे बड़ा होकर जब वही पौधा एक बड़ा मज़बूत पेड़ बन जाता है तो उसे उखाड़ फेंकना बड़ा ही कठिन हो जाता है। ऐसे ही छोटी-छोटी बुरी आदतें आगे चलकर ऐसी बड़ी और मजबूत हथकड़िया बन जाती हैं जिन से छुटकारा पाना बड़ा ही मुश्किल हो जाता है। बाइबल में लिखा है, कि, "प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषाओं के द्वारा खिंचकर व फंसकर परीक्षा में पड़ता है। और जब अभिलाषा गर्भवती होती है तो पाप को जनती है, और जब पाप हो जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।" (याकूब १:१४-१५)। सो इस प्रकार हम देखते है, कि पाप एक छोटे से रुप में आरम्भ होता है और धीरे-धीरे बढ़कर वह एक विशाल व्यक्तित्व धारण कर लेता है। और बाइबल कहती है, कि पाप की मजदूरी मृत्यु है। (रोमियों ६:२३)।

अब हम बाइबल में से एक ऐसी कहानी पढ़ने जा रहे हैं जिस से हम यह देखते हैं कि एक पाप मनुष्य को किस प्रकार दूसरा और तीसरा और अनेक अन्य पाप करने की ओर ले जाता है। यह कहानी एक बड़े ही धर्मी राजा के सम्बन्ध में है। उस राजा का नाम दाऊद था। बाइबल में लिखा है, कि दाऊद

एक बड़ा ही धर्मी और नेक आदमी था। और उसकी ईश्वर-भक्ति से परमेश्वर इतना खुश था कि उस ने दाऊद को इस्त्राएलियों का राजा बना दिया था। दाऊद की ईश्वर-भक्ति का प्रमाण हमें इस बात में भी मिलता है कि उसने परमेश्वर की प्रशंसा में अनेकों ऐसे सुंदर भजनों को लिखा था जिन्हें आज भी लोग पढ़कर आत्मिक ज्ञान और लाभ प्राप्त करते हैं। और फिर बाइबल यह भी कहती है कि दाऊद एक भविष्यद्वक्ता था। (प्रेरितों २:३०)। लेकिन इन सब बातों के अलावा, दाऊद एक इन्सान था। और कोई भी इन्सान ऐसा नहीं है जिसने कभी कोई पाप न किया हो या जो पाप करने के योग्य नहीं है। पवित्र बाइबल में मनुष्यों के बारे में यूं लिखा है, कि सबने पाप किया है और सब इस कारण परमेश्वर से दूर हो गए हैं। (रोमियों ३:२३)।

लेकिन दाऊद की कहानी में हम इस तरह पढ़ते हैं, कि: "सांझ के समय दाऊद पलंग पर से उठकर राजभवन की छत पर टहल रहा था, और छत पर से उसको एक स्त्री, जो अति सुंदर थी, नहाती हुई देख पड़ी। जब दाऊद ने भेजकर उस स्त्री को पुछवाया, तब किसी ने कहा, कि क्या यह एलीआम की बेटी, और हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी बतशेबा नहीं है? तब दाऊद ने दूत भेजकर उसे बुलवा लिया; और वह दाऊद के पास आई, और वह उसके साथ सोया। तब वह अपने घर लौट गई। और वह स्त्री गर्भवती हुई, तब उसने दाऊद के पास कहला भेजा कि मुझे गर्भ है। तब दाऊद ने योआब के पास कहला भेजा, कि हित्ती ऊरिय्याह को मेरे पास भेज। तब योआब ने ऊरिय्याह को दाऊद के पास भेज दिया। जब ऊरिय्याह उसके पास आया तब दाऊद ने उससे योआब और सेना का कुशल क्षेम पूछा और युद्ध का हाल पूछा। तब दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, अपने घर जाकर अपने पांव धो। और ऊरिय्याह राज भवन से निकला, और उसके पीछे राजा के पास से कुछ इनाम भेजा गया। परन्तु ऊरिय्याह अपने स्वामी के सब सेवकों के संग राज भवन के द्वार में लेट गया, और घर न गया। जब दाऊद को यह समाचार मिला, कि उरिय्याह अपने घर नहीं गया, तब दाऊद ने उरिय्याह से कहा, क्या तू यात्रा करके नहीं आया? तो अपने घर क्यों नहीं गया? उरिय्याह ने दाऊद से कहा, जब संदूक और इस्त्राएल और यहूदा झोंपड़ियों में रहते हैं, और मेरा स्वामी

योआब और मेरे स्वामी के सेवक खुले मैदान पर डेरे डाले हुए हैं, तो क्या मैं घर जाकर खाऊं पीऊं और अपनी पत्नी के साथ सोऊं? तेरे जीवन की शपथ, और तेरे प्राण की शपथ कि मैं ऐसा काम नहीं करने का। तब दाऊद ने उरिय्याह से कहा, आज यहीं रह, और कल मैं तुझे विदा करुंगा। इसलिये उरिय्याह उस दिन और दूसरे दिन भी यरुशलेम में रहा। तब दाऊद ने उसे नेवता दिया, और उसने उसके सामने खाया - पीया, और उसी ने उसे मतवाला किया; और सांझ को वह अपने स्वामी के सेवकों के संग अपनी चारपाई पर सोने को निकला, परन्तु अपने घर न गया। बिहान को दाऊद ने योआब के नाम पर एक चिट्ठी लिखकर उरिय्याह के हाथ से भेज दी। उस चिट्ठी में यह लिखा था, कि सब से घोर युद्ध के सामने ऊरिय्याह को रखना, तब उसे छोड़कर लौट आओ, कि वह घायल होकर मर जाए। और योआब ने नगर को अच्छी रीति से देख-भाल कर, जिस जगह वह जानता था कि वहां वीर हैं, उसी में ऊरिय्याह को ठहरा दिया। जब नगर के पुरुषों ने निकलकर योआब से युद्ध किया, तो लोगों में से, अर्थात दाऊद के सेवकों में से कितने खेत आए; और उन में हित्ती उरिय्याह भी मर गया।" "जब ऊरिय्याह की पत्नी ने सुना कि मेरा पति मर गया, तब वह अपने पति के लिये रोने-पीटने लगी। और जब उसके विलाप के दिन बीत चुके, तब दाऊद ने उसे बुलवाकर अपने घर में रख लिया, और वह उसकी पत्नी हो गई, और उसके पुत्र उत्पन्न हुआ। परन्तु उस काम से जो दाऊद ने किया था यहोवा (परमेश्वर) क्रोधित हुआ"

"तब यहोवा (परमेश्वर) ने दाऊद के पास नातान (भविष्यद्वक्ता) को भेजा, और वह उसके पास जाकर यूं कहने लगा, कि एक नगर में दो मनुष्य रहते थे, जिन में से एक धनी और एक निर्धन था। धनी के पास तो बहुत सी भेड़-बकरियां और गाय-बैल थे। परन्तु निर्धन के पास भेड़ की एक छोटी सी बच्ची को छोड़ और कुछ भी न था। और उसने उसको मोल लेकर पाला था। और वह उसके यहां उसके बाल-बच्चों के साथ ही बड़ी थी; वह उसके टुकड़े में से खाती, और उसके कटोरे में से पीती और उसकी गोद में सोती थी, और वह उसकी बेटी के समान थी। और एक दिन उस धनी के पास एक मेहमान

आया, और उसने उस मेहमान के लिये, जो उसके पास आया था, भोजन बनवाने को अपनी भेड़-बकरियों वा गाय-बैलों में से कुछ न लिया, परन्तु उस निर्धन मनुष्य की भेड़ की बच्ची लेकर, उस जन के लिये, जो उस के पास आया था, भोजन बनवाया। तब दाऊद का कोप उस मनुष्य पर बहुत भड़का; और उसने नातान से कहा, यहोवा के जीवन की शपथ, जिस मनुष्य ने ऐसा काम किया है वह प्राण दन्ड के योग्य है; और उसको उस भेड़ की बच्ची का चौगुना भर देना होगा, क्योंकि उस ने ऐसा काम किया है, और कुछ दया नहीं की।

"तब नातान ने दाऊद से कहा, तू ही वह आदमी है-----तूने यहोवा की आज्ञा तुच्छ जानकर क्यों वह काम किया जो उसकी दृष्टि में बुरा है? हित्ती उरिय्याह को तूने तलवार से घात किया, और उसकी पत्नी को अपनी कर लिया है, और उरिय्याह को अम्मोनियों की तलवार से मरवा डाला है।" और लिखा है, कि तब दाऊद ने अपने पाप को स्वीकार किया और नातान से कहा, कि "मैने यहोवा (परमेश्वर) के विरुद्ध पाप किया है।" और यह सुन नातान ने दाऊद से कहा कि, "यहोवा (परमेश्वर) ने तेरे पाप को दूर किया है; तू न मरेगा।" "तौभी तूने जो इस काम के द्वारा यहोवा के शत्रुओं को तिरस्कार करने का बड़ा अवसर दिया है, इस कारण तेरा जो बेटा उत्पन्न हुआ है वह अवश्य ही मरेगा।" (२ शमूएल ११,१२)।

.sp 5pt

राजा दाऊद की इस कहानी से यूं तो आज हम बहुत सी बातें सीखते हैं, लेकिन एक खास बात यहां हम यह देखते हैं, कि अगर हम अपने पाप को मानलें तो परमेश्वर इतना प्रेमी और दयालू है कि वह सदा हमारे पापों को क्षमा करने को तैयार है। यानि मनुष्य का कोई भी पाप उसके अनुग्रह से बड़ा नहीं है!

पवित्र बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा है, कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३:१६)। प्रभु यीशु ने पापियों के लिये क्रूस पर अपने बलिदान के बाद, मृतकों में से जी उठकर यूं कहा था,

कि, जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। (मरकुस १६:१६)। यानि परमेश्वर ने हम सब के लिये अपने अनुग्रह को प्रदर्शित किया है।

पर क्या दाऊद की तरह आज आप भी अपने पापों को स्वीकार करने को तैयार हैं? परमेश्वर चाहता है, कि आप उसके उस पुत्र में विश्वास लाएं जो पापियों के लिये अपनी मृत्यु के कारण आप के और सारे जगत के पापों का प्रायश्चित है। और वह चाहता है, कि आप उस में होकर उसकी आज्ञाओं पर चलकर अपना जीवन बिताएं।

हमें याद रखना चाहिए, कि परमेश्वर महान और सर्वशक्तिमान है। वह मनुष्य के गुप्त पापों को भी जानता है। इसीलिये परमेश्वर की पवित्र पुस्तक बाइबल कहती है "कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है। क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का चाहे वे भली हों या बुरी न्याय करेगा।" (सभोपदेशक १२:१३, १४)।

पाप और अनुग्रह

अपने पाठ में पिछली बार हमने दाऊद की कहानी को बाइबल में से पढ़ा था। उसी कहानी में से कुछ और खास बातें हैं जिन्हें इस समय मैं आप के सामने रखना चाहता हूं। मेरा विश्वास है, कि ये सब बातें परमेश्वर ने अपनी बाइबल में इसीलिये लिखवाई हैं ताकि इन्हें पढ़कर हम अपने जीवनों में इनसे शिक्षा प्राप्त करें।

आप को याद होगा कि हमने बाइबल में से पढ़ा था, कि जब दाऊद अपने राजभवन की छत पर टहल रहा था तो उस ने देखा था कि एक स्त्री, जो बड़ी ही सुंदर थी, नीचे नहा रही थी। उस स्त्री को नहाते देखकर उसके मन में बुरी भावनाएं और गंदे विचार उत्पन्न हुए थे। और उसने उसे अपने राज-भवन में बुलाकर उसके साथ व्यभिचार किया था। दाऊद का अपराध हमें साफ नज़र आता है। लेकिन, अब मैं चाहता हूँ कि थोड़ी देर के लिये हम उस स्त्री के ऊपर भी ध्यान दें। हम देखते है कि वह एक ऐसी जगह नहा रही थी, जहां से उसको देखा जा सकता था। उसने इस बात की सतर्कता नहीं बर्ती थी कि वह किसी एक ऐसी जगह नहाती जहां उसे कोई देख नहीं पाता। दूसरे शब्दों में, उसने अपने शरीर के अंगों को प्रदर्शित करके दाऊद के मन में बुरी भावनाओं को पैदा किया था, और इसलिये यह स्पष्ट है कि दाऊद के पाप में वह स्त्री भी शामिल थी। प्रभु यीशु ने एक बार कहा था, कि, "तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था कि व्यभिचार न करना। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उसके साथ व्यभिचार कर चुका।" (मत्ती ५:२७,२८)। लेकिन कोई पुरुष किसी स्त्री पर अक्सर कब कुदृष्टि डालता है? यह मैं खासकर आप स्त्रीयों से पूछ रहा हूं, कि एक पुरुष अक्सर कब एक स्त्री को गन्दी नज़र से देखता है? क्या इस बात का जिम्मेदार स्त्रियों का

अंग-प्रदर्शन या पहिनावा नहीं है? दाऊद की कुदृष्टि बतशैबा पर पड़ी थी, क्योंकि बतशेबा खुले आंगन में नहा रही थी। आज स्त्रियों के विरुद्ध बलात्कार और दुर्व्यवहार की घटानाएं संसार में सभी जगह बहुतायत से हो रही हैं। और इसका एक खास कारण है स्त्रियों का आधुनिक पहनावा। जबकि आज औरतें ऊंचे और तंग और महीन कपड़े पहिन कर बाज़ारों और सड़कों पर घूम रही है, और फैशन के नाम पर अश्लीलता का प्रदर्शन कर रही हैं। तो उस से आज क्या आशा की जा सकती है? इस तरह से स्त्रियां स्वयं पुरुषों को आज अपने विरुद्ध पाप करने को भड़का रही हैं। पवित्र बाइबल का लेखक स्त्रियों से कहता है, कि, "तुम्हारा सिंगार दिखावटी न हो, अर्थात् बाल गूंथने और सोने के गहने, या भांति-भांति के कपड़े पहनना। बरन तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है।" (१ पतरस ३:३,४)। फिर, एक अन्य जगह परमेश्वर की पुस्तक कहती है, कि स्त्रियों को चाहिए की वे "संकोच और संयम के साथ सुहावने वस्त्रों से अपने आप को संवारें न कि बाल गूंथने, और सोने और मोतियों, और बहुमोल कपड़ों से, पर भले कामों से। क्योंकि परमेश्वर की भक्ति ग्रहण करनेवाली स्त्रियों को यही उचित भी है।" (१ तीमुथियुस २:६,१०)।

बतशेबा के बारे में हम यह देखते हैं कि अगर वह अपनी नग्नता का प्रदर्शन उस प्रकार न करती जैसा कि उसने किया था तो दाऊद उस पाप में नही पड़ता। लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि बतशेबा दाऊद के पाप के लिये ज़िम्मेदार थी। दाऊद ने खुद, अपनी अभिलाषा से खिंचकर पाप किया था। वह स्वयं अपने पाप के लिये ज़िम्मेदार था। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि, "सब प्रकार की बुराई से बचे रहो।" (१ थिस्सलुनीकियों ५: २२)। जब तक इन्सान इस ज़मीन पर है तब तक बुराई भी मौजूद रहेगी-लेकिन परमेश्वर से प्रेम रखनेवाले और उससे डरनेवाले लोगों को चाहिये कि वे बुराई से बचें। ठीक ऐसे ही जैसे कि सड़क पार करते समय हम मोटर-गाडियों से बचते हैं और जंगली रास्ते सें होकर गुज़रते वक्त हम कीड़े-काटों से बचते हैं। लेकिन दाऊद बुराई से बचा नहीं, क्योंकि उसने बचने की कोशिश ही नहीं की, इसके विपरित वह बुराई में फंस गया था।

दाऊद के बारे में हम पढ़ते हैं कि वह, एक बहुत बड़ा राजा था। वह परमेश्वर से प्रेम रखता था। वह उसकी आराधना करता था; वह उसका भय मानता था। लेकिन फिर भी वह अपने शरीर की अभिलाषा से और अपनी आंखों की अभिलाषा से खिंचकर पाप में पड़ गया था। सो इस से हम देखते हैं कि इन्सान कितना कमज़ोर है। कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं है जिसमें पाप करने की क्षमता न हो, जो पाप न कर सकता हो। कोई भी इन्सान ऐसा नहीं है जिसने कभी कोई पाप न किया हो। परमेश्वर की पवित्र बाइबल कहती है, कि "यदि हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं: और हम में सत्य नहीं। पर यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।" (१ यूहन्ना १:८,९)।

यही कारण है कि परमेश्वर ने हमें अपने वचन की पुस्तक बाइबल को दिया है। दाऊद के पाप को उस पर प्रकट करने के लिये परमेश्वर ने उसके पास अपने भक्त नातान को भेजा था। लेकिन आज परमेश्वर अपने वचन की किताब में हम से यूं कहता है, कि सब ने पाप किया है और सब के सब परमेश्वर से दूर हो गए हैं। (रोमियों ३:२३)। उस के वचन की पुस्तक आज हमें बताती है कि मनुष्य को पाप से बचाने के लिये परमेश्वर ने एक बहुत बड़ा बलिदान दिया है। बाइबल कहती है, कि, "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है परन्तु परमेश्वर का बरदान हमारे मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।" (रोमियों ६:२३)। क्योंकि यीशु को परमेश्वर ने जगत के पापों का प्रायश्चित बनाकर बलिदान किया था। परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई भी मनुष्य अपने पाप के कारण नाश हो। वह जानता है, कि मनुष्य पाप करता है; और उसे मालूम है, कि मनुष्य पाप में है। हर एक इन्सान दाऊद की तरह छिपकर पाप करता है। लेकिन परमेश्वर की नज़र से कुछ नहीं छिप सकता। वह मनुष्य के गुप्त कामों को भी जानता है। लेकिन वह पाप के कारण किसी भी इन्सान का नाश नहीं चाहता। उसने दाऊद के पास नातान को भेजकर दाऊद को एक अवसर दिया था कि वह अपने पाप को मान ले। और कितनी ही अच्छी बात हम दाऊद के बारे में यह देखते हैं, कि जब नातान ने दाऊद पर यह प्रकट किया कि दाऊद ने पाप किया है, तो उसने अपने पाप को मान लिया, और कहा कि "मैंने

परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है।" अकसर लोग अपने पाप को छिपाते हैं, और अपने पाप को मानने से इन्कार करते हैं, पर दाऊद ने स्वीकार करके कहा था कि मैंने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है। उसने माना था कि वह पापी है।

क्या हम आज अपने सब पापों को मानने को तैयार हैं? क्या आपने परमेश्वर के बरदान यीशु मसीह में यह विश्वास किया है, कि वह आप के पापों का प्रायश्चित है? क्या आप ने प्रत्येक पाप से अपना मन फिरा लिया है? क्या आप ने यीशु की आज्ञा मानकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले लिया है? यह हर एक इंसान के लिये परमेश्वर की आज्ञा है। (मत्ती २८:१९,२०; मरकुस १६:१५,१६; प्रेरितों २:३८)।

पाप मनुष्य को नाश करता है। लेकिन परमेश्वर मनुष्य से प्रेम रखता है, और इसलिये उसे पाप से बचाना चाहता है। उसने मनुष्य से इतना प्रेम रखा, कि उसने अपने एकलौते पुत्र यीशु को सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने को बलिदान कर दिया। वह चाहता है, कि आप उसके पुत्र पर विश्वास लाएं और उसकी आज्ञाओं को मानें। (इब्रानियों ५:८,९)। वह आप को बचाना चाहता है। वह आप का उद्धार करना चाहता है। वह आप को पाप से मुक्त करके एक नया और पवित्र जीवन देना चाहता है। लेकिन यह तभी सम्भव हो सकता है यदि आप दाऊद कि तरह यह मान लें, कि हां, मैंने पाप किया है।

पाप और मुक्ति

इस सुंदर अवसर के लिये मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। सत्य सुसमाचार के इस कार्यक्रम में हम आप लोगों का ध्यान उन बातों की तरफ दिलाने की कोशिश करते हैं जिन्हें हम परमेश्वर के वचन की पुस्तक से सीखते हैं। बाइबल से एक बड़ी ही खास बात हम यह सीखते हैं, कि पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर की नज़र में बड़ा ही महत्वपूर्ण व्यक्ति है। परमेश्वर हम लोगों को ऐसे नहीं देखता जैसे कि हम आपस में एक दूसरे को देखते हैं। हम लोगों की कीमत उनके धन, शोहरत, इज्जत, और ओहदे और इल्म को देखकर लगाते हैं। परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में इन वस्तुओं का कोई महत्व नहीं है। वह हम सब को एक ही निगाह से देखता है, और हम सब से बराबर प्रेम करता है। आप शायद एक विद्यार्थी हैं, या एक मजदूर या किसान हैं। शायद आप किसी दफतर या फैक्टरी में काम करते हैं। या हो सकता है कि आप कुछ भी नहीं करते हैं । शायद आप एक बीमार और कमजोर इन्सान हैं। लोगों की नज़र में शायद आप का कोई महत्व न हो, और हो सकता है कि स्वयं आप भी अपने आपको बड़ा ही छोटा और महत्वरहित अनुभव करते हों। लेकिन सच्चाई यह है, कि परमेश्वर की नज़र में आप एक बड़े ही महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं। परमेश्वर आप से प्रेम रखता है; उसे आप की चिन्ता है ; और वह आप का ख्याल रखता है। और इसका कारण यह है कि जब परमेश्वर आप को देखता है, और हम सब को देखता है, तो वह हमें ऐसे देखता है जैसे हम सब उसके वंश है।

बाइबल हमें बताती है, कि हम सब मनुष्य परमेश्वर का वंश हैं। (प्रेरितों. १७:२६)। क्योंकि आरम्भ में परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरुप और अपनी समानता पर उत्पन्न किया था। इसी कारण जब परमेश्वर हमें देखता है,

तो वह हमें ऐसे देखता है जैसे हम सब उसके बालक हैं। इन्सान अपने बच्चों से प्रेम करता है, उनकी चिन्ता करता है, उनकी देखभाल करता है, केवल इसलिये नहीं कि यह उसका कर्त्तव्य है, परन्तु इस कारण क्योंकि वह अपने बच्चों से प्रेम करता हैं। अपने बच्चों के साथ मॉ-बाप का प्यार बच्चों के धन-दौलत या इज़्ज़त और शौहरत के कारण नहीं होता है। लेकिन उस अपार प्रेम का आधार वह रिश्ता या संबंध होता है जो माता-पिता और उन की संतान के बीच होता है, और वास्तव में देखने में यह भी आता है कि मॉ-बाप का प्यार उन बच्चों पर और भी अधिक होता है जो बीमार या कमज़ोर होते हैं या किसी कारणवश कुछ बन नहीं पाते। ठीक यही बात हम अपने आत्मिक पिता परमेश्वर के संबंध में भी देखते हैं। उसकी किताब, बाइबल हमें यह बताती है कि वह हम सब से एक समान प्रेम रखता है। वह सब की चिन्ता करता है, और सब से अधिक चिन्ता उसे उन लोगों की है जो उस से दूर हैं और जो अपना जीवन उस से दूर रहकर अज्ञानता और अंधकार में व्यतीत कर रहे हैं।

जब हम इस बात पर विचार करते हैं, कि परमेश्वर हम से प्रेम रखता है और उसे हमारी चिन्ता है, तो हमें बड़ी ही खुशी का अनुभव होता है। लेकिन एक बड़ी ही शोकपूर्ण बात बाइबल हमें यह बताती है कि हर एक इन्सान स्वयं अपने ही अधर्म के कामों के कारण परमेश्वर से दूर और अलग है। (यशायाह ५६:१,२)। परमेश्वर ने मनुष्य को अपने से अलग नहीं किया है, परन्तु स्वयं मनुष्य ने अपने आपको सच्चे परमेश्वर से अलग कर लिया है। अपने मन की अनर्थ रीति के अनुसार चलकर मनुष्य ने अपने आपको अशुद्ध बना लिया है। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि "भीतर से, अर्थात मनुष्य के मन से बुरी-बुरी चिन्ता, व्यभिचार, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा अभिमान और मूर्खता निकलती है। ये सब बुरी बातें भीतर ही से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।." (मरकुस ७:२१-२३)।

सो मनुष्य अशुद्ध हैं। वह भीतर से अशुद्ध है, और अशुद्ध होने के कारण वह अपने सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर से अलग है। क्योंकि परमेश्वर पवित्र है। मनुष्य अपने मन से अशुद्ध है। क्योंकि हर एक पाप जो इंसान करता है उसकी उपज

अपने मन से अशुद्ध है। क्योंकि हर एक पाप जो इंसान करता है उसकी उपज मनुष्य के मन से ही होती है। इसी कारण पवित्र बाइबल में लिखा है, कि सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर, क्योंकि जीवन का मूल स्त्रोत वही है। (नीतिवचन ४:२३) प्रभु यीशु ने कहा था, कि यदि तुम मन नहीं फिराओगे तो तुम अपने पापों में ही नाश हो जाओगें। (लूका १३:३)। मनुष्य को चाहिए कि वह पाप से अपना मन मोड़ ले और परमेश्वर की बात मानकर उसके पास वापस आ जाए। क्योंकि यदि वह ऐसा नहीं करेगा, तो इस जीवन के बाद उसे फिर कोई अवसर मन फिराने का नहीं मिलेगा। मनुष्य को एक परिवर्तन की आवश्यकता है।

यह इंसान की एक बहुत बड़ी भूल है कि वह पाप में रहकर अपनी उपासना तथा आराधना के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहता है। यह असंभव है। परमेश्वर उन लोगों की प्रार्थना को नहीं सुनता है जो पाप में हैं, और जिन्होंने अपना मन नही फिराया है, और जिन्होंने अपने पापों की क्षमा पाने के लिये उसकी आज्ञा को नहीं माना है। वह उनके भजनों और गीतों की तरफ कोई ध्यान नहीं देता है। वह उनकी उपासना और आराधना को स्वीकार नहीं करता है। बाइबल में लिखा है, और परमेश्वर ऐसे लोगों के बारें में यूँ कहता है, "कि ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझसे दूर रहता है, और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं ।" (मत्ती १५:८,९)।

मनुष्यों के बनाए रीति-रिवाजों पर चलकर हम परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। ढोल-ढपली और बाजे और तालियॉ बजाकर हम परमेश्वर को खुश नहीं कर सकते। अनेक लोग आज अपने आप को धोखा दे रहे हैं ऐसा सोचकर, कि वे दान-पुण्य के काम करके या पूजा-पाठ करके स्वर्ग में चले जाएंगे। बहुतेरे लोग ऐसा भी सोचते हैं, कि क्योंकि वे बाइबल पढ़ते हैं और "चर्च" में एतवार के दिन जाते हैं, इसलिए वे स्वर्ग में भी चले जाएंगे। परन्तु हमें प्रभु यीशु के इन शब्दों को नहीं भूलना चाहिए, प्रभु ने कहा था, कि जो मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु कहते हैं उन में से हर एक स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगा, परन्तु स्वर्ग में केवल वही इंसान जाएगा जो परमेश्वर पिता की इच्छा पर चलता है। (मत्ती ७:२१)। सो हमारे लिये सब से बड़ी बात यही है कि हम परमेश्वर की

इच्छा को जानें और फिर उस पर चलें। क्या आप परमेश्वर की इच्छा को जानते है ? क्या आप उस पर चलते हैं ?

इसी एक मात्र उद्देश्य से परमेश्वर ने हमें बाइबल को दिया है। बाइबल में परमेश्वर ने हमें बताया है, कि हर एक इंसान पाप के कारण उस से दूर है, और जब तक वह अपने पापों की क्षमा नहीं प्राप्त कर लेगा वह परमेश्वर से अलग ही रहेगा। अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये परमेश्वर ने हमें एक उपाय बताया है, और वह उपाय है यीशु मसीह । उसे परमेश्वर ने स्वर्ग से पृथ्वी पर भेजा था, ताकि वह सारे जगत के लोगों के पापों का प्रायश्चित अपनी मृत्यु के द्वारा करे, और बाइबल में हम यीशु मसीह के महान बलिदान की कहानी को पढ़ते हैं, हम पढ़ते हैं कि उसने परमेश्वर की इच्छा से हम सब के पापों को अपने ऊपर लेकर अपने आप को बलिदान कर दिया था। वह हमारे पापों का प्रायश्चित बना था ।

सो परमेश्वर ने हम सब के उद्धार के लिये जो करना था, वह उसने कर दिया है। यीशु ने जो हमारे उद्धार के लिये करना था। वह उस ने कर दिया है, लेकिन उस उद्धार को प्राप्त करने के लिये हमें भी परमेश्वर की इच्छा को मानना चाहिए और उस की आज्ञा का पालन करना चाहिए। परमेश्वर हम सब से चाहता है कि हम सब अपने सारे दिल से यीशु मसीह में यह विश्वास लाएँ कि वह हमारे पापों का प्रायश्चित है; और अपने सब पापों से अपना मन फिराएँ, और अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु का बपतिस्मा लें। और फिर वैसा ही जीवन व्यतीत करें, और वैसी ही चाल चलें, और उसी तरह से परमेश्वर की आराधना-उपासना करें जैसे कि उसने हमें यीशु मसीह के द्वारा बाइबल में सिखाया है। (मरकुस १६:१६; लूका १३:५;१ पतरस २:२१)?

संसार में यूँ तो सामाजिक और धार्मिक अनेकों अच्छी पुस्तकें हैं। परन्तु परमेश्वर के वचन की पुस्तक, जिसमें हम उस की इच्छा को पढ़ते हैं, पृथ्वी पर केवल एक ही है, और वह पुस्तक है - बाइबल। इस पुस्तक में लिखा है कि यदि हम इस जीवन में इस में लिखी बातों को नहीं मानते तो न्याय के दिन यही किताब हमें दोषी ठहराएगी। परन्तु धन्य हैं वे लोग जो इस पुस्तक में लिखी बातों को सुनते हैं और उन पर अमल करते हैं। (यूहन्ना १२:४८; प्रकाशितवाक्य १:३)।

पाप पर विजय

मनुष्य की एक बड़ी ही कठिन समस्या यह है कि वह पाप के ऊपर किस प्रकार विजय प्राप्त करे। हम सब पृथ्वी पर एक ऐसे वातावरण में रहते हैं जहाँ हमारे सामने, हर तरह के लालच और हर प्रकार की परीक्षाएँ विद्यमान होती हैं। कई बार हमारे सामने कुछ ऐसी मजबूरियाँ आ जाती हैं, जिनके कारण हमें ऐसा लगता है कि बिना झूठ बोले, या रिश्वत दिए बग़ैर हम कोई काम कर ही नहीं सकते। तौभी, हम यह जानते है कि पाप की मजदूरी, बाइबल के अनुसार, मृत्यु है (रोमियों ६:२३)। और बाइबल कहती है कि शरीर के काम करनेवाले जो परमेश्वर की दृष्टि में बुरे हैं, परमेश्वर के राज्य में कदापि प्रवेश नही करेंगें। (१कुरिन्थियों ६:९,१०; गलतियों ५:१९)। सो किस तरह से हम पाप से बच सकते हैं? पाप और अधर्म से भरपूर इस संसार में हम किस प्रकार एक ऐसा जीवन व्यतीत कर सकते हैं जो परमेश्वर को ग्रहण योग्य हो ? हम इस संसार को छोड़कर, और लोगों के बीच में से निकलकर जंगलों और पहाड़ों में जाकर नहीं रह सकते। बुराई और लालच को देखकर हम उसे नजर-अंदाज नहीं कर सकते; यानि हम उसे देखकर अपनी आंखें नहीं बंद कर सकते। क्योंकि वह वहां है। पर हम उस से कैसे बच सकते हैं ? ऐसे ही यह भी सच है कि जब हम यीशु मसीह में अपने सारे मन से विश्वास ले आते हैं और अपने सब पापों से मन फिराकर बपतिस्मा ले लेते हैं तो परमेश्वर हमारे पिछले जीवन के सब पापों को क्षमा कर देता है जैसे कि बाइबल हमें सिखाती है। क्योंकि प्रभु यीशु ने हमारे सब पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर अपने पवित्र जीवन को बलिदान किया था। और बाइबल कहती है, कि उसमें हम एक नई सृष्टि बन जातें हैं। (२ कुरिन्थियों ५:१७)। परन्तु यीशु

मसीह में एक नई सृष्टि बन जान क बाद भी हम उसी जगत में और उन्हीं लोगों के बीच में रहते हैं जहाँ हम पहले थे। यानि, यीशु मसीह में विश्वास ले आने के बाद, और अपना मन फिरा लेने के बाद, और अपने सब पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले लेने के बाद भी हमारे सामने वही पहले के से लालच होते है, वही परीक्षाएं और वही मजबूरियाँ होती हैं। हम बार-बार पाप करके बार-बार अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा नहीं ले सकते। बाइबल हमें ऐसी शिक्षा नहीं देती। परन्तु फिर भी परमेश्वर हम से यह चाहता है कि हम पाप न करें और उसके सामने धर्मी और पवित्र बनें रहें। पर यह कैसे संभव हो सकता है ? पाप और अंधकार से परिपूर्ण इस संसार में हम पाप से कैसे बच सकते हैं ?

पाप से उद्धार पाने का और पाप से बचने का केवल एक मात्र मार्ग परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह ही है। क्रूस पर पापियों के लिये बलिदान हो जाने के कारण, यीशु न केवल हमारे पिछले बीते हुए जीवन के सब पापों को ही क्षमा करता है। परन्तु अपनी मृत्यु से पहले उसने संसार में रहकर लोगों के बीच में जो जीवन बिताया था, उसका वह जीवन आज हमारे लिये एक आदर्श है। यीशु हमारी ही तरह इस पृथ्वी पर सब लोगों के बीच में रहा था। आज की ही तरह उस वक्त भी ऐसे-ऐसे लोग थे जो झूठ बोलते थे, और चोरी करते थे, और लालच में फंसकर झूठी गवाही दे देते थे और लोगों की जान ले लेते थे। बहुतेरे लोग उस वक्त भी यीशु के शत्रु थे, और वे उसे बुरी नज़र से देखते थे, और उस पर हर तरह के झूठे दोष लगाते थे, और उसे मार डालना चाहते थे। यद्यपि यीशु परमेश्वर का पुत्र था, लेकिन फिर भी वह आपकी और मेरी ही तरह एक मनुष्य था। उसे गुस्सा दिलाया जा सकता था। उसे परीक्षा में डाला जा सकता था। और उसे लालच में फंसाया जा सकता था। क्रूस पर चढ़ने के समय उसकी उम्र कुल तेंतीस वर्ष की थी। यानि उस वक्त वह एक नौजवान था। वह एक ऐसी उम्र से होकर गुज़र रहा था जिसमें कोई भी आदमी लालच या परीक्षा में आसानी से फंसाया जा सकता है। शैतान भी इस बात को जानता था, और उस ने हर तरह से चाहा भी कि वह यीशु को परीक्षा में फंसा ले। उसने उसे भूखा देखकर उसे रोटी का लालच दिया था। उसने उसे घमण्ड से भरना चाहा था, और दुनिया का धन-दौलत और इज्जत और

शौहरत दिखाकर उस से कहा था कि अगर तू परमेश्वर को छोड़कर संसार के अन्य लोगों की तरह मेरे पीछे हो ले तो मैं यह सारी चीजें तुझे दे दूंगा। यानि हर प्रकार की परीक्षाएँ यीशु के सामने आई थीं अब यदि परमेश्वर चाहता तो वह शैतान को अपने पुत्र की परीक्षा करने का मौका ही नहीं देता। लेकिन उस ने ऐसा नहीं किया। परमेश्वर हमारे सामने से परीक्षाओं को नहीं हटाता है, क्योंकि वह जानता है कि हमारे विश्वास के परखे जाने से हमारे भीतर धीरज उत्पन्न होता है। (याकूब १:३)। परन्तु वह हमारी परीक्षा के समय निकास अवश्य करता है। (१ कुरिन्थियों १:१३)। यानि यदि हमारा भरोसा, हमारा विश्वास उस पर पक्का है, तो वह हमें ऐसी सामर्थ देता है कि हम परीक्षा के समय डगमगाकर गिर न जाएँ। जब यीशु की परीक्षा हुई थी। तब परमेश्वर में अपने सिद्ध विश्वास का उत्तर उसने यह कहकर दिया था, "कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं,परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।" और फिर यीशु ने अपने परखनेवाले से कहा था, कि, "हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर और केवल उसी की उपासना कर।" और, तब शैतान उसके पास से चला गया था। (मत्ती ४:४,१०,११)। यानि यीशु ने अपने मजबूत विश्वास से शैतान को हरा दिया था।

बाइबल कहती है, कि शैतान का सामना करो तो वह तुम्हारे सामने से भाग निकलेगा। (याकूब ४:७)। पर हमारी समस्या यह है, कि जब हमारी परीक्षा होती है तो हम शैतान का सामना करने के विपरीत उसके सामने अपने सारे हथियार डाल देते हैं। अगर कोई हमारी बुराई करता है तो हम उस की बुराई करते हैं। यदि कोई हमें थप्पड़ मारता है तो हम उसे घूंसा मारते हैं। यदि कोई हमें एक गाली देता है तो हम पलटकर उसे दो गाली देते हैं। हमारा व्यवहार ऐसा हो जाता है कि हम आंख के बदले आंख और टांग के बदले टांग लेना चाहते है। अगर हमें कोई काम निकालना होता है और वह काम आसानी से नहीं हो पाता तो हम पैसे निकालकर घूस दे देते हैं। यदि हमें कोई पैसा देकर हम से कोई गलत काम करवाना चाहता है तो हम उस लालच के सामने अपना सिर झुका देते हैं। बहुतेरे नौजवान अपने दोस्तों के ज़रा से कहने में आकर अपने चरित्र को बिगाड़नेवाली बुरी आदतें पाल लेते हैं। और जब हम

ऐसा कोई काम करते हैं, तो शैतान हमें देखकर मुस्कराता है और खुश होता है। क्योंकि वह तो यही चाहता है कि हम अपने जीवनों को परमेश्वर के विरोध में व्यतीत करें। वह नहीं चाहता कि हम पवित्र और अच्छा जीवन निर्वाह करके परमेश्वर के पास जाएं। उसने उन दो पहले इंसानों को भी नहीं छोड़ा था, जिन्हें परमेश्वर ने आरम्भ में अपनी समानता और अपने स्वरुप पर बनाकर इस पृथ्वी पर रखा था, और जिनके हम सब संतान हैं। उसने उन्हें उनकी आंखों की अभिलाषा से परखा था ; उसने उनकी परीक्षा उनके शरीर की अभिलाषा से की थी,और उसने उन्हें सांसारिक घमण्ड और बड़ाई का लालच दिया था। और हम जानते हैं, कि शैतान का सामना करने के विपरीत उन्हों ने अपने हथियार उसके सामने फेंक दिए थे। ठीक ऐसे ही जैसे आज हम में से अधिकतर लोग उसके सामने झुक जाते हैं।

लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए, कि यदि हम एक बार शैतान का सामना करने से चूक जाते हैं, तो वह धीरे-धीरे हमें अपने अधिकार में कर लेता है, और हम उसके दासत्व में फंसकर उसके गुलाम बन जाते हैं। आज बहुतेरे लोग यह कह रहे है, कि हम अपनी बुरी आदतों को छोड़ना चाहते हैं, लेकिन छोड़ नहीं पाते। वे अपने गन्दें कामों से तंग आ चुके है, लेकिन उन्हें छोड़ने की इच्छा रखने के बावजूद भी वे उन्हें छोड़ नहीं पाते, क्योंकि वे अपने आप को कमज़ोर समझते हैं। कुछ लोग तो अपने बुरे जीवन से तंग आकर अपनी आत्महत्या भी कर लेते हैं। लेकिन पाप से बचने का सबसे अच्छा समय तब होता है, जब लालच या परीक्षा को शैतान सबसे पहली बार हमारे सामने रखता है। यदि उस समय हम उसका सामना करके उसे "नहीं" कह देंगे, तो अगली बार भी "नहीं" कहने में हमें कोई मुश्किल नहीं होगी। लेकिन अगर पहली ही बार उसकी बातों में आकर हम उसकी बात मान लेंगे, तो आगे को उसे "नहीं" कहना हमारे लिये न केवल मुश्किल ही होगा बल्कि असंभव हो जाएगा।

जब हम प्रभु यीशु मसीह के ऊपर ध्यान करते हैं, और उसके जीवन पर विचार करते हैं, तो हम देखते हैं, कि वह यद्यपि हमारी ही तरह एक इंसान था, लेकिन फिर भी उसने एक ऐसा जीवन निर्वाह किया था जिसमें न तो कोई पाप था और न कोई बुराई थी। और इस से हमें आज यह शिक्षा मिलती है, कि

यदि हम भी प्रभु यीशु का सा आचरण और उसका सा स्वभाव अपने ऊपर धारण कर लें, तो हम भी उसी की तरह एक पाप-रहित जीवन व्यतीत कर सकते हैं। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि मसीह यीशु अपने जीवन के द्वारा हमें एक आदर्श दे गया है कि हम उसके चिन्ह पर चलें। (१पतरस २:२१)। क्या आज आपके जीवन का आदर्श परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह है ? जब हम उस में विश्वास लाकर और उसकी आज्ञा को मानकर उसके पास आतें हैं, तो वह हमारे सब पापों को क्षमा कर देता है। और जब हम प्रतिदिन उस का सा जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करते हैं, तो वह हमें पाप पर विजय प्राप्त करने के लिये शक्ति देता है। इसीलिये उसने कहा था, कि मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं, और बिना मेरे कोई परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता।

यीशु हमें सब पापों से बचाता है

इस समय मैं आप को यह बताना चाहता हूं कि यीशु, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह हमें सब पापों से बचाता है। क्या यह खुशी की बात नहीं है ? निश्चय ही, यह बड़ी ही खुशी की बात है। शताब्दियों से इस जगत में बड़े-बड़े गुरु और भगवान हुए हैं, और आज भी अनेक गुरु और भगवान पृथ्वी पर पाए जाते हैं। उन्हों ने अपने अनुयायियों को कुछ सिद्धान्त सिखाए हैं, कुछ शिक्षाएँ दी हैं, और कुछ अच्छी-अच्छी बातें सिखाई हैं। उन्हों ने सिखाया है कि झूठ न बोलें, चोरी न करें, और कोई भी बुरा काम न करें। उन्होंने सिखाया है कि इंसान पाप न करे। लेकिन उनमें से किसी एक ने भी कोई एक ऐसा काम कभी नहीं किया जिसके ज़रिये से इन्सान को पापों से मुक्ति मिल जाए। पाप न करना और पाप से मुक्ति पाना दो अलग-अलग बातें है। जैसे कि मान लीजिए कोई व्यक्ति आज यह निश्चय करता है, कि वह आज से पाप नहीं करेगा। अब यह बड़ी अच्छी बात है। लेकिन प्रश्न यह उठता है, कि जो पाप उस ने इससे पहले आज तक किए हैं उन से उसका छुटकारा कैसे होगा । किन्तु इंसान को पाप से छुटकारा पाने की आवश्यकता क्यों हैं ? मनुष्य पूजा-पाठ या आराधना क्यों करता है ? क्यों वह किसी धर्म को मानता है ? क्यों वह धर्म के काम करता है ? इन सब बातों का केवल एक ही उद्देश्य है, अर्थात् मनुष्य स्वर्ग में जाना चाहता है। वह नरक में जाने से बचना चाहता है, वह परमेश्वर या परमात्मा के पास जाना चाहता है।

लेकिन स्वर्ग में कौन जाएगा ? नरक में प्रवेश करने से कौन बचेगा ? परमेश्वर के पास कौन जाएगा ? सिर्फ वही इंसान जिसमें कोई पाप नहीं होगा। इसलिये, स्वर्ग में परमेश्वर के पास जाने के लिये हमें न केवल पाप करना ही छोड़ना है, परंतु हमें अपने उन सब पापों की क्षमा भी प्राप्त करनी आवश्यक है, वह सब पाप, जिन्हें हमने जाने या अनजाने में अब तक अपने

जीवन में किया है। और न केवल इतना ही, लेकिन हमें एक ऐसे मार्ग की भी आवश्यकता है जिसके ऊपर चलकर हम पाप करने से बचे रहें, और यदि हमसे कोई पाप भूल से या गलती से हो जाता है तो ऐसे पापों की क्षमा भी हमें उसके द्वारा प्रतिदिन मिलती रहे। यह चारों बातें हर एक मनुष्य के लिये बड़ी ही आवश्यक हैं, इनके बिना कोई भी इंसान स्वर्ग में परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता। यानि एक तो यह,कि मनुष्य पाप करना छोड़े ; और दूसरे यह, कि अपने सब पिछले पापों की क्षमा प्राप्त करे ; और तीसरे यह, कि वह एक ऐसे मार्ग पर चले कि फिर आगे को पाप न करे ; और चौथे यह, कि अगर भूल-चूक से उस से कोई पाप हो जाता है - और ऐसी गलतियां इंसान से दिन में कई बार हो सकती हैं - तो उन पापों की क्षमा उसको प्रतिदिन मिलती रहे। और हमारी ये सभी आवश्यकताएं प्रभु यीशु मसीह में पूरी होती हैं। इसीलिये, मैंने आरम्भ में आप से कहा था, कि आज मैं आप को यह बताने जा रहा हूं कि यीशु हमें सब पापों से बचाता है।

मनुष्य का जीवन पृथ्वी पर बड़ा ही अनिश्चित है। वह कभी भी किसी भी परिस्थिति में, और किसी भी अवस्था में इस जगत को छोड़कर जा सकता है। लेकिन अगर वह पाप को अपने साथ लेकर इस जगत से जाएगा तो वह स्वर्ग के द्वार को देख तक भी नहीं पाएगा। क्योंकि परमेश्वर पवित्र है और स्वर्ग उसके रहने का पवित्र स्थान है। इसलिये प्रभु यीशु ने लोगों को सबसे पहली आज्ञा यह दी थी कि मन फिराओ, अर्थात् पाप करना छोड़ो (मरकुस १:१४,१५)। और उसने कहा था, कि अगर तुम पाप से अपना मन नहीं फिराओगे तो तुम सब अपने ही पापों में नाश होगे। (लूका १३:३,५)। पर कौन नाश होना चाहता है ? कौन पाप के कारण नरक में अनंत विनाश का दण्ड पाने के लिये जाना चाहता है ? ऐसा कोई भी नहीं चाहता। इसलिये यीशु हम से कहता है कि हम पाप से अपना मन फिराएँ। क्या आप के जीवन में पाप है ? आपके जीवन में बहुतेरे पाप हो सकते हैं। आपको चाहिए कि आप परमेश्वर के पुत्र की बात मानकर अपने सब पापों से अपना मुंह मोड़ लें, अपना मन फिरा लें और अपने मन में यह निश्चय कर लें कि अबसे आगे को फिर आप कभी कोई पाप नहीं करेंगे। बिना मन फिराए कोई भी इंसान परमेश्वर के राज्य को देख भी नहीं पाएगा।

फिर, परमेश्वर के वचन की पुस्तक बाइबल हमें उसके पुत्र यीशु मसीह के बलिदान के बारें में बताती है। उसमें लिखा है, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उसके पुत्र पर विश्वास लाए, वह नाश न हो परंतु हमेशा का जीवन पाए। (यूहन्ना ३:१६)। और लिखा है, कि परमेश्वर ने जगत पर अपने प्रेम को इस प्रकार प्रकट किया था कि जब हम सब पापी ही थे तो मसीह हमारे लिये मर गया। (रोमियों ५:८)। और फिर हम यह भी पढ़ते हैं, कि परमेश्वर का पुत्र यीशु सारे जगत के पापों का प्रायश्चित है। (१ यूहन्ना २:२)। और ऐसे ही बाइबल हमें यह भी बताती है, कि यीशु ने परमेश्वर के अनुग्रह से पृथ्वी पर हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखा था। (इब्रानियों २:९)। और यद्यपि उस में कोई भी पाप नहीं था, लेकिन फिर भी परमेश्वर ने उसे हम सब के कारण एक पापी मान लिया था, क्योंकि वह उसी की इच्छा से हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर लटकाया गया था, ताकि यीशु में होकर, उसके द्वारा, हम सब परमेश्वर के निकट पाप-रहित बन जाएँ। (२ कुरिन्थियों ५:२१)। और यह उस वक्त होता है, जब हम अपने सारे मन से यीशु में विश्वास लाकर अपने पापों की क्षमा के लिये उसके नाम से बपतिस्मा लेते हैं। प्रभु यीशु ने अपनी मृत्यु के बाद और मृतकों में से जी उठने के बाद, सब लोगों को यह आज्ञा दी थी कि मेरे सुसमाचार को सुनकर जो व्यक्ति मुझ पर विश्वास लाएगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा (मरकुस १६:१६), यानि वह अपने उन सब पापों से छुटकारा पाएगा जो उसने अपने जीवन में पहले किये हैं।

प्रभु यीशु ने यह भी कहा था, कि मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं, बिना मेरे द्वारा कोई परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता। (यूहन्ना १४:६)। पहले किए गए अपने सब पापों की क्षमा पाने के लिये बपतिस्मा ले लेने के बाद, हमें चाहिए कि हम यीशु का, जो परमेश्वर और स्वर्ग का मार्ग है, अनुसरण करें। मसीह यीशु के अनुयायियों के लिये बाइबल में लिखा है, कि "क्योंकि न तो उसने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आपको सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था"।

और, "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएँ।" (१ पतरस २:२१-२४)। सो आगे को पाप से बचे रहने के लिये हमें चाहिए कि हम यीशु के जीवन का और उसके व्यवहार का और आदर्श का पालन करें। उसने कभी कोई पाप नहीं किया था और अगर हम उसके आदर्श का पालन करेंगे तो हम भी पाप करने से बचे रहेंगे। यानि हम जानबूझकर अपनी इच्छा से पाप नहीं करेंगे ।

लेकिन हम इंसान हैं, और इसलिये हम कमज़ोर हैं। और जब तक इस दुनिया में हम हैं हम से कोई न कोई ग़लती हो सकती है। यदि हम पाप से अपना मन फिराकर पाप करना छोड़ देते हैं, और यीशु में विश्वास लाकर अपने सब पिछले पापों की क्षमा पाने के लिये बपतिस्मा भी ले लेते हैं, और यीशु के आदर्शों पर चलने का पूरा प्रयत्न भी करते हैं। लेकिन फिर भी परमेश्वर की दृष्टि में हम सिद्ध नहीं बन जाते। कोई न कोई गलती हम फिर भी कर बैठते हैं, और जब तक हम इस जीवन में है हम न चाहते हुए भी कोई न कोई गलत काम कर सकते हैं। पवित्र बाइबल में लिखा है, "यदि हम कहें, कि उसके साथ हमारी सहभागिता है और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैं : और सत्य पर नहीं चलते। पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है। यदि हम कहें, कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं : और हम में सत्य नहीं। यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। यदि कहें कि हमने पाप नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं और उसका वचन हम में नहीं है।" बाइबल का लेखक कहता है कि, "मैं यह बातें तुम्हें इसलिये लिखता हूं, कि तुम पाप न करो: पर यदि कोई पाप करें, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात् धार्मिक यीशु मसीह। और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है, और केवल हमारे ही नहीं, वरन् सारे जगत के पापों का भी।" (१ यूहन्ना १:६-१०; २:१,२)।

क्या आप यीशु मसीह में विश्वास करते हैं ? क्या आप ने उसकी आज्ञा को माना हैं ? क्या आप उसकी आज्ञाओं पर चलते हैं ? क्या वह आप का मुक्तिदाता है ? वह आपके सम्पूर्ण जीवन को बदल सकता है। उस में अनन्त जीवन की आशा है। वह आप के सब पापों से आप को छुटकारा दिला सकता है; और आनेवाले जीवन में आप को स्वर्ग में हमेशा की जिन्दगी दे सकता है। वह चाहता है, कि आप उसके पास आएं। क्या कोई ऐसी चीज़ हैं जो आपको उस के पास आने से रोकती है? होने दें कि कोई ऐसी चीज न हो आप के जीवन में जो आप को उसके पास आने से रोके। क्योंकि उसने आप के उद्धार के लिये अपनी जान दी थी। केवल वही आपकी आत्मा को पाप के दण्ड से और नरक में जाने से बचा सकता है। और आपकी आत्मा से बढ़कर महत्वपूर्ण और कोई वस्तु इस जगत में नहीं है।

पाप का मार्ग

बाइबल कहती है, कि एक ऐसा मार्ग है जो मनुष्य को ठीक दिखाई पड़ता है, लेकिन उसके अन्त में उसे मृत्यु ही मिलती है। (नीतिवचन १४:१२)। प्रभु यीशु ने शिक्षा देकर एक बार कहा था, कि "सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।" (मत्ती ७:१३,१४)। बाइबल हमें दो अलग-अलग रास्तों के बारे में बताती है। ये दो ऐसे मार्ग हैं जिन में से एक में हर एक इन्सान आज चल रहा है। अगर आज आप सकरे मार्ग पर नहीं चल रहे हैं तो निश्चय ही आप चौड़े मार्ग पर चल रहे हैं। यदि आप सकेत फाटक से प्रवेश करने का प्रयत्न नहीं कर रहे हैं तो निश्चय ही आप चौड़े फाटक से भीतर जा रहे हैं। परन्तु परमेश्वर की इच्छा यह है, कि हम सब उसके सकरे मार्ग पर चलकर सकेत फाटक से होकर उसके राज्य में प्रवेश करें। लेकिन इस वक्त हम यह देखेंगे कि वह चौड़ा और बड़ा मार्ग कौन सा है जिसके बारे में यीशु ने कहा था कि अधिकांश लोग उसी पर चलते हैं और वह मार्ग अनन्त मृत्यु को पहुंचाता है?

यह वह मार्ग है, बाइबल कहती है, जो मनुष्य को अकसर ठीक दिखाई पड़ता है। यह मनुष्य का मार्ग है, जिस पर वह अपनी इच्छानुसार चलता है। यह वह मार्ग है, जिस पर चलकर वह झूठ बोल सकता है, और चोरी कर सकता है; अपनी जुबान से गन्दी बातें बोल सकता है और गालियां बक सकता है। यह चौड़ा मार्ग वह मार्ग है जिसके ऊपर चलकर वह अपने मन की अनर्थ रीति पर चल सकता है; वह अपने पड़ोसी की बुराई कर सकता है; और

किसी को भी धोखा दे सकता है। इस मार्ग पर चलकर वह शराब पी सकता है; नशा कर सकता है; जुआ खेल सकता है और कोई भी गन्दा काम कर सकता है। मनुष्य को ठीक दिखाई पड़नेवाला यह चौड़ा मार्ग इतना बड़ा है कि उस पर चलकर दुनिया का कोई भी काम किया जा सकता है। लेकिन बाइबल कहती है, कि इस मार्ग के अन्त में मनुष्य को सिर्फ अनन्त विनाश ही मिलेगा। मनुष्य को ठीक दिखाई पड़ने वाला जगत का यह मार्ग अन्त में मनुष्य को नरक में ले जाएगा। और एक बहुत ही बड़ी सच्चाई यह है, कि आज संसार के अधिकांश लोग इसी भयानक मार्ग के ऊपर चल रहे हैं।

लेकिन यह कोई नया मार्ग नहीं है। यह रास्ता उतना ही पुराना है जितना कि खुद इन्सान है। मनुष्य के सबसे पहिले माता-पिता, यानि आदम और हव्वा, जिन्हें परमेश्वर ने आरम्भ में बनाया था इसी मार्ग पर चलने के कारण नाश हुए थे। उन्हों ने परमेश्वर के बताए सकरे मार्ग को तुच्छ समझा था। उन्होंने सोचा था, कि यदि वे शैतान के बताए चौड़े मार्ग पर चलेंगे तो वे बुद्धिमान और परमेश्वर के समान महान् बन जाएंगे। लेकिन उस मार्ग पर चलकर उन्हें क्या मिला था? वे परमेश्वर की संगति से अलग हो गए थे, उनका आत्मिक जीवन नाश हो गया था, और शारीरिक रुप से उन्हें अनेकों समस्याओं ने आ घेरा था। वे परमेश्वर की सुंदर बाटिका से बाहर निकाल दिये गए थे, पृथ्वी पर अनेकों कठिनाईयों का सामना करके उन्हें जीवन निर्वाह करना पड़ा था। उनकी देह को तरह-तरह के रोग लगने लगे थे, और उनके शरीर घटने लगे थे और फिर एक दिन वे मर गए थे। और यही क्रम तब से अब तक चलता आ रहा है, और जब तक यह दुनिया कायम है तब तक यह चलता ही रहेगा। क्योंकि पाप का चौड़ा मार्ग मनुष्य को विनाश को पहुंचाता है।

फिर, बाइबल में हम उन लोगों के बारे में भी पढ़ते हैं, जो नूह के दिनों में रहते थे। यह वह समय था जबकि पृथ्वी पर मनुष्यों की गिनती बहुत अधिक हो गई थी। और जैसे-जैसे ज़मीन पर लोगों का शुमार बड़ा था उसी तरह से पाप भी पृथ्वी पर बहुत अधिक फैल गया था। बाइबल हमें उस समय के बारे में यूं बताती है, कि उस वक्त धर्मी नूह और उसके परिवार के लोगों को छोड़ और कोई भी इन्सान परमेश्वर के सकरे मार्ग पर नहीं चल रहा था। वे सब के सब

पाप के चौड़े मार्ग के ऊपर चल रहे थे। और इसलिये परमेश्वर ने यह निश्चय किया था, कि वह उन सब लोगों को पृथ्वी पर से मिटा डालेगा। लेकिन उस बड़े महाजल-प्रलय के पृथ्वी पर आने से पहले, जिसके द्वारा सब लोगों का नाश होने जा रहा था, परमेश्वर ने नूह को आज्ञा देकर यह कहा था कि तू उन सब लोगों में जाकर यह प्रचार कर कि पाप के कारण पृथ्वी पर एक बहुत बड़ा जल-प्रलय आनेवाला है जिसके द्वारा सब लोगों का नाश हो जाएगा, लेकिन जो इन्सान अपना मन फिराकर परमेश्वर के सकरे मार्ग पर लौट आएगा वह बच जाएगा। किन्तु, बाइबल हमें बताती है कि यद्यपि नूह ने इन बातों का प्रचार उन सब लोगों में कई वर्षो तक किया था, तौभी उन में से एक ने भी अपना मन नहीं फिराया था। और इसलिये, जब निश्चित समय पर जल-प्रलय आया था तो वे सब नाश हो गए थे। उनके पास उस समय एक चुनाव था। वे अपना मन फिराकर परमेश्वर के तंग और सकरे मार्ग पर चल सकते थे। लेकिन उन्हों ने पाप के चौड़े मार्ग पर चलना अधिक उचित समझा था। उन्हों ने नूह की बात पर विश्वास नहीं किया था। उन्हों ने सोचा था कि जिस मार्ग पर वे चल रहे हैं वही ठीक है। परमेश्वर की बात सुनकर उन्होंने उसका ठट्ठा उड़ाया था; उसकी हंसी और मज़ाक किया था परन्तु चौड़े मार्ग पर चलने के कारण अन्त में उन्हें मृत्यु ही मिली थी। और इस जगत के लोगों के लिये आज वे एक बहुत बड़ा उदाहरण हैं। वे तो नाश हो गए, लेकिन आज भी उनकी मूर्खता की मिसाल हमारे सामने ज़िंदा है।

प्रभु यीशु ने, जगत के अन्त में, संसार के न्याय और अपने वापस आने के विषय में एक बार इस प्रकार कहा था, कि जैसे नूह के समय के दिन थे वैसे ही मेरा आना भी होगा। क्योंकि जैसे जल-प्रलय के पहले के दिनों में, जिस दिन तक नूह जहाज़ पर नहीं चढ़ा था, हो रहा था, यानि लोग खा-पी रहे थे, उन में ब्याह -शादियां हो रही थीं; और जब तक जल-प्रलय आकर उनको बहाकर नहीं ले गया, तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा, वैसे ही मेरा आना भी होगा। प्रभु ने कहा था, कि उस समय दो जन खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। दो स्त्रियां चक्की पीस रही होंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी। इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा। (मत्ती २४:३७-४२)।

मित्रो, बाइबल में यह भी लिखा हुआ है, कि "परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा। क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।" (गलतियों ६:७,८)।

इस जमीन पर आज आपके सामने यह एक बहुत बड़ा सवाल है, कि आज आप कौन से मार्ग पर चल रहे हैं? अगर आप परमेश्वर के सकरे मार्ग पर नहीं चल रहे हैं, तो आप एक बड़े ही खतरनाक रास्ते पर चल रहे हैं। आप एक ऐसे मार्ग पर चल रहे हैं जिसका अन्त अनन्त विनाश है। परमेश्वर के वचन की पुस्तक पवित्र बाइबल कहती है कि "परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब लोगों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है, और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।" (प्रेरितों १७:३०,३१)।

परमेश्वर का मार्ग उसका पुत्र प्रभु यीशु मसीह है। उसने कहा था, कि मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं, और बिना मेरे द्वारा कोई परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता। (यूहन्ना १४:६)। यदि हम परमेश्वर के पास पहुंचना चाहते हैं; अगर हम उसके सकरे मार्ग पर चलकर अनन्त जीवन पाना चाहते हैं, तो हमें चाहिए कि हम उसके बताए हुए मार्ग अर्थात् प्रभु यीशु मसीह के पीछे हो लें। बाइबल में लिखा है, कि यीशु क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा सारे जगत के पापों का प्रायश्चित है। (१ युहन्ना ४:१०) और अपने जीवन के द्वारा वह हमारी अगुवाई करता है। (१ पतरस २:२४)। प्रभु यीशु ने कहा था, कि मुझ पर जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। (मरकुस १६:१६)।

इस वर्तमान समय में परमेश्वर किसी प्रकार का प्रलय भेजकर मनुष्य को पाप का दन्ड नहीं देगा। लेकिन निश्चय ही उसने सब लोगों के न्याय का एक दिन ठहराया है। पर क्या आप उस दिन के लिये तैयार हैं?

पाप से बचने का मार्ग

हमने अपने पिछले पाठ में पाप के मार्ग के बारे में देखा था। और अब हम यह देखेंगे कि पाप से बचने का मार्ग कौन सा है। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि, "हर एक रोकनेवाली वस्तु, और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें। और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें, जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा: और सिहांसन पर परमेश्वर के दहिने जा बैठा। इसलिये उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना वाद-विवाद सह लिया, कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो" क्योंकि, "तुम ने पाप से लड़ते हुए उससे ऐसी मुठभेड़ नहीं की, कि तुम्हारा लहू बहा हो।" (इब्रानियों १२:१-४)।

प्रभु यीशु मसीह को बाइबल हम पर केवल एक उद्धारकर्ता के रुप में ही प्रकट नही करती है। यद्यपि यह सच है कि वह स्वर्ग से पृथ्वी पर आया था और फिर उस ने क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा जगत के पापों का प्रायश्चित भी किया था। और फिर वह मुर्दों में से जी उठकर स्वर्ग पर वापस चला गया था। परन्तु इसके साथ यीशु को बाइबल में एक ऐसे मार्ग की तरह भी दर्शाया गया है जिस पर चलकर हम प्रतिदिन अपने जीवनों में पाप से बच सकते हैं।

जब हम प्रभु यीशु मसीह में अपने सारे मन से विश्वास ले आते हैं। और जब हम उसे अपने पापों का प्रायश्चित मान लेते हैं। और जब हम उसकी मृत्यु को अपनी मृत्यु समझ लेते हैं। और उसकी आज्ञा मानकर पाप से अपना मन फिरा लेते हैं और अपने सब पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले लेते हैं। बाइबल कहती है, कि तब हम एक दौड़ में शामिल हो जाते हैं। और धार्मिकता की उस दौड़ में हमारा एक नया जीवन आरम्भ होता है। हम यह मान लेते हैं कि हमारा पहला या पिछला जीवन क्रूस पर यीशु के साथ मर चुका है। और

वह मरा हुआ जीवन बपतिस्मे के पानी में गाड़े जाने के कारण दफन हो चुका है। और उस पानी में से बाहर निकलकर यीशु पर विश्वास करने के द्वारा हमारा एक नया जन्म हुआ है, और एक नए जीवन का आरम्भ हुआ है। किन्तु उस नए जन्म के बाद, उस नए जीवन में हमारे सामने कई बाधाएं आती हैं, बहुत सी रुकावटें आती हैं जो हमें आगे बढ़ने से रोकती हैं। और अनेकों ऐसे पाप होते है जिनमें उलझकर हम अपनी धार्मिकता की दौड़ में हार सकते हैं, और फलस्वरुप उस बड़े ईनाम को खो सकते हैं, यानि अनन्त जीवन के उस मुकुट को, जिसे परमेश्वर ने अपने धर्मी लोगों को देने की प्रतिज्ञा की है।

इसलिये यह बड़ा ही जरुरी है, कि धार्मिकता की दौड़ में दौड़ते हुए हम यीशु को प्रतिदिन और हरएक परिस्थिति में अपने सामने रखें। वह प्रतिदिन हमारे जीवन का निशाना होना चाहिए। वह हमारा उद्देश्य होना चाहिए। और वह हमारा आदर्श होना चाहिए। क्योंकि अगर हम उससे चूक जाएंगे तो हम कभी भी सफल नहीं हो सकते। क्योंकि हम इन्सान है; और शैतान, जो हमारा विरोधी है, वह बड़ा ही शक्तिशाली है। बाइबल कहती है, कि वह एक दहाड़ने वाले शेर की तरह हमेशा इस ताक में रहता है कि किसको फाड़ खाए। शैतान, जो परमेश्वर का विरोधी है, वह नहीं चाहता कि हम परमेश्वर के पुत्र यीशु को अपना उद्धारकर्ता बनाकर उसके द्वारा परमेश्वर के साथ अपना मेल कर लें और उसके पास वापस आ जाएं। लेकिन दूसरी ओर परमेश्वर नहीं चाहता है कि हम शैतान की युक्तियों में फंसकर नाश हो जाएं। वह हमें पाप से बचाना चाहता है; वह हमारा उद्धार करना चाहता है, और वह हमें स्वर्ग में हमेशा की जिन्दगी देना चाहता है। शैतान हमारा ध्यान गन्दी बातों की तरफ आकृषित करता है। वह हमें आंखों की अभिलाषा और शरीर की अभिलाषा के द्वारा प्रलोभन देता है। वह हमें दुनिया की चमक-दमक दिखाता है, और हमें उकसाता है कि हम गलत काम करें। वह हमारे मन में ऐसी बातें डालता है कि थोड़ा सा झूठ बोलने से या थोड़ी सी घूस लेने या देने से कोइ फर्क नहीं पड़ता है। वह हर तरह से यह कोशिश करता है कि हम उसी की तरह अपना जीवन भी परमेश्वर के विरोध में बिताएं। परन्तु परमेश्वर हम से कहता है, कि हम हर समय उसके पुत्र यीशु की ओर ताकते रहें और अपना ध्यान हर वक्त उसी

पर रखें। ताकि हम पाप से बचें और बुराई से बचें। क्योंकि वह हम से प्रेम करता है। उसने हमें अपने स्वरुप पर और अपनी ही समानता पर बनाया है। और यद्यपि हम ने उसकी आज्ञा के विरोध में चलकर पाप किया है, और उसकी पवित्र संगति से अपने आप को अलग कर लिया है। तौभी उसने अपने सामर्थी वचन को अपने एकलौते पुत्र के रुप में जगत में भेजकर, उसे हम सब के पापों के प्रायश्चित के लिये क्रूस पर बलिदान कर दिया है। ताकि हम पाप से मुक्त होकर पवित्र बन जाएं।

और अब वह कहता है, कि हम अपना ध्यान यीशु की और लगाएं; उसको देखें, और उसे अपने जीवनों का आदर्श बनाएं। क्योंकि संसार में ऐसा कोई भी लालच नहीं है, ऐसा कोई भी प्रलोभन नहीं है, और ऐसी कोई भी परीक्षा नहीं है जिसका सामना आज हमें करना पड़ता है और उसका सामना यीशु को न करना पड़ा हो। वह बिल्कुल ऐसे ही एक मनुष्य था जैसे कि हम हैं। भूख और प्यास का सामना उस ने किया था। जितनी चीजें या कपड़े आज आप के पास हैं उसके पास उतने भी नहीं थें। शैतान ने उसे हम सब की ही तरह प्रलोभन दिया था, एक धनी और एक बड़ा आदमी बनने का, लेकिन उसने उसे यह कहकर और डांटकर अपने पास से भगा दिया था कि शैतान मेरे पास से दूर हो जा। वह जानता था कि वह परमेश्वर का पुत्र है लेकिन फिर भी उसने अपना जीवन पृथ्वी पर एक दास और एक सेवक की तरह बिताया था। और जो लोग अपने आप को उसका चेला कहते थे उसने उन्हीं के पांव अपने हाथों से धोए थे। उसके पास अद्भुत सामर्थ थी, और वह बड़े-बड़े महान काम करता था। लेकिन उस ने कभी भी घमन्ड नहीं किया था। और अपने आप को बड़ा नहीं बनाया था; उसने कभी अपनी प्रशंसा या बड़ाई के लिये कोई काम नहीं किया था। उसके बहुतेरे शत्रु थे। लेकिन उसने उनसे बैर नही रखा था उसने उन्हें कभी गाली नहीं दी थी, न उन्हें कोई श्राप दिया था। बल्कि वह उनसे प्रेम करता था और उनके लिये प्रार्थना करता था। कोई भी इंसान अपनी मौत को सामने देखकर अपने आप को बचाने के लिये कुछ भी करने को तैयार हो जाएगा। लेकिन यीशु ने अपने आप को अपने शत्रुओं के हवाले कर दिया था, कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए। किन्तु उस ने झूठ नहीं बोला था। इसीलिये

बाइबल में यीशु के सम्बन्ध में यूं लिखा है कि, "हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके। बरन वह सब बातों में हमारी तरह परखा तो गया लेकिन तौभी निष्पाप निकला।" (इब्रानियों ४:१५)।

क्या आप जानते हैं, कि यीशु को क्रूस पर क्यों मृत्यु दन्ड दिया गया था? उसका दोष क्या था? उसका दोष केवल इतना ही था कि उसने अपने बारे में कहा था कि मैं परमेश्वर का पुत्र हूं। यहूदी, जो उसे क्रूस पर चढ़ाना चाहते थे, उनके निकट यह बात बड़ी ही अपमान जनक थी। और अगर यीशु ऐसा न कहता तो वह क्रूस पर न मरता। लेकिन वह झूठ क्यों बोलता? उसे अपनी देह की चिन्ता नहीं थी। परन्तु उसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य था परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना। पापियों के लिये उनके स्थान पर मरना। उसके सामने यह एक बहुत बड़ी खुशी की बात थी, कि वह अपने जीवन से परमेश्वर की मर्जी को पूरा कर रहा था। और इस बात के लिये उसने क्रूस की दुखदायी और शर्मनाक मौत को अपने ऊपर उठा लिया था। उस समय लोग उसे गालियां दे रहे थे; और उसे ताने दे देकर कह रहे थे कि अगर तू सचमुच में परमेश्वर का पुत्र है तो अब अपने आप को बचा ले। तूने तो बड़े-बड़े काम किए हैं, अब तो अपने आप को बचा ले।

पर यीशु ने पाप का सामना करते हुए अपना लोहू बहा दिया, लेकिन उसने कभी कोई पाप नहीं किया, न तो मुंह से, और न मन से, और न शरीर से। और अगर हम हमेशा यीशु को अपने सामने रखकर चलें तो हम भी पाप करने से बचे रहेंगे। जब हमें कोई गाली देगा, या हमारी बुराई करेगा; जब शैतान हमें गलत और बुरा काम करने के लिये उकसाएगा, तो हम यह याद करेंगे कि यदि मेरी जगह उस समय यीशु होता तो वह क्या करता?

क्या यीशु आप के जीवन का आदर्श है? अपना जीवन उसे दे दीजिए, तब वह अपना जीवन आप को दे देगा। उसमें विश्वास कीजिए और उसकी आज्ञाओं को मानिये। वह आप को न केवल इस जीवन में ही बचाएगा बल्कि भविष्य में आप को स्वर्ग में हमेशा का जीवन भी देगा। इसी सुसमाचार को आप तक पहुंचाने के लिये इस पुस्तक की रचना की गई है। पवित्र बाइबल का एक लेखक एक जगह इस प्रकार कहता है। "सब कुछ सुना गया; अन्त की

बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है। क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का चाहे वे भली हो या बुरी न्याय करेगा।" (सभोपदेशक १२:१३,१४)।